ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष- 11, 2083 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-09, अंक - 320 | पेज 8, मूल्य 2 रुपए

डाक पंजीयन क्रमांकः म.प्र./4-474/2024-26

भोपाल
26 मई 2026 मंगलवार

बेबाक खबर हर दोपहर
दोपहर मेट्रो

आज का मौसम
43.4 अधिकतम
29.4 न्यूनतम

Page-7

ईरान- इजराइल के बीच सुलह में फंसते पेंच और उस पर ट्रम्प के बदलते पैंतरे

वॉर एनालिसिस

● राजेश सिरोठिया

ईरान का धर्मसंकट और ट्रम्प के लिए मसीहा बनने का मौका

ईरान और इजराइल के बीच का संघर्ष केवल सैन्य कार्रवाई से खत्म होने वाला नहीं है। यह लड़ाई अब सिर्फ सीमाओं या सुरक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि प्रतिष्ठा, प्रभाव और वैश्विक राजनीति की जिद में बदल चुकी है। ऐसे में यदि कोई देश इस संकट को शांत कर सकता है, तो वह संयुक्त राज्य अमेरिका है। लेकिन इसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति को ताकत की भाषा छोड़कर कूटनीति और संयम का रास्ता अपनाना होगा। दुनिया की नजरें ट्रम्प और अमेरिकी नेतृत्व पर टिकी हैं। यदि ट्रम्प कुछ समय के लिए अपने जिद्दी और अड़ियल रवैये को किनारे रख दें, तो वे वास्तव में शांति के मसीहा बन सकते हैं। लेकिन यदि उन्होंने फिर से युद्ध का रास्ता चुना, तो न केवल अमेरिकी जनता बल्कि पूरी दुनिया उन्हें माफ नहीं करेगी।

पश्चिम एशिया में जारी तनाव ने यह साफ कर दिया है कि ईरान और इजराइल के बीच के पेंच इतनी आसानी से नहीं सुलझने वाले। इस संकट का समाधान केवल सैन्य शक्ति या धमकियों से संभव नहीं है। इसके लिए बड़ा दिल दिखाने और दूरंदेशी भरी राजनीतिक परिपक्वता की दरकार डोनाल्ड ट्रम्प से है ,क्योंकि वह खुद इस संघर्ष का प्रत्यक्ष हिस्सा हैं ।

अगर ट्रम्प इसके लिए वाकई गंभीर हैं तो उन्हें कुछ जरुरी बदलाव अपने आप में करने होंगे । सबसे पहले ईरान को लगातार धमकाने की राजनीति छोड़नी होगी। विडंबना यह है कि वे एकतरफ जब भी किसी समझौते के करीब पहुंचने का दावा करते हैं, उसके कुछ ही पलों के बाद ईरान को तबाह करने की चेतावनी आ जाती है। नतीजा क्या होता है, यह किसी से छुपा नहीं है। ईरान भी उनकी धमकी पर तुरंत तीखा पलटवार करता है। ऐसे में सुलह की सारी बातें कहीं खोकर रह जाती हैं। कभी अमेरिकी सेना होर्मुज में बमबारी करके खेल बिगाड़ देती है। तो ट्रम्प इजराइल की सुरक्षा के लिहाज से अब्राहम समझौतों की फाइल निकलते हैं। इजराइल इससे उल्ट दक्षिण लेबनान पर हमला करके फिर गतिरोध के हालत पैदा कर देता है।

दुनिया के सामने सबसे बड़ा सवाल अमेरिका की विश्वसनीयता और उसकी कूटनीतिक साख पर लगा है। टैरिफ़ ट्रिक से लेकर जंग के नाम पर उनकी टेरर नीति ईरान सहित अन्य देशों के खिलाफ छेड़े गए संघर्षों तक, हर मोर्चे पर विरोधाभासों से घिरी दिखाई देती है। कभी अमेरिका की ताकत को दुनिया 'बंद मुट्ठी लाख की' मानती थी, लेकिन आज हालत यह हो गई है कि वही मुट्ठी खुलने पर 'खाक' जैसी प्रतीत होने लगी है। वैश्विक कूटनीति के मंच पर हाल के दशकों के इतिहास में किसी अमेरिकी राष्ट्रपति की ऐसी दुर्दशा शायद पहले कभी नहीं हुई। ट्रम्प यदि यह मान बैठे हैं कि केवल आर्थिक दबाव, सैन्य शक्ति और धमकियों के दम पर वे दुनिया के बड़े देशों को झुका लेंगे, तो यह उनका सबसे बड़ा मुगालता ही माना जायेगा।

यह भी सच है कि अमेरिका के लिए इजराइल की सुरक्षा और उसके अस्तित्व की रक्षा एक पुरानी प्रतिबद्धता रही है। लेकिन दूसरी ओर उसे ईरान के शासकों की प्रतिष्ठा और वहां की आंतरिक राजनीति का भी ध्यान रखना होगा। आखिरकार इस जंग में सबसे ज्यादा नुकसान ईरान ने ही झेला है। उसने अपने कई शीर्ष सैन्य कमांडर और प्रभावशाली नेता खोए हैं। ऐसे में यदि ईरानी नेतृत्व बिना किसी सम्मानजनक समझौते के ट्रम्प की कठोर शर्तों के आगे झुक जाता है, तो वहां की जनता अपने ही बचे हुए नेताओं के खिलाफ बगावत कर देगी ।

ईरान को 'कुछ ही दिनों में मसल डालने' का जो दंभ दिखाया गया था, वह अब बुरी तरह चकनाचूर होता दिखाई दे रहा है। यदि अमेरिका दोबारा ईरान पर बड़े सैन्य हमले की कोशिश करता है, तो चीन और रूस जसे कई देश अब पहले की तरह चुप नहीं बैठेंगे। चीन के लिए ईरान उर्जा जरूरतों के लिहाज से जरुरी है तो रूस भी अब यूक्रेन युद्ध के आर्थिक सदमे से उबर चुका है। वैश्विक संकेत साफ हैं और इसकी इबारत दीवार पर लिखी जा चुकी है। अब उसे पढ़ना है या नजरअंदाज करना, यह फैसला ट्रम्प और अमेरिकी नेतृत्व को ही करना है। अब फैसला ताकत का नहीं, समझदारी का होगा।

न्यूज विंडो

एक्सप्रेस-वे पर बस पलटने से दारोगा-कैदी समेत 7 की मौत

उन्नाव। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस वे आज सुबह छह बजे 100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से दिल्ली से बिहार जा रही स्लीपर बस के चालक को झपकी आने से बस

अनियंत्रित होकर अंडरपास की पुलिया के डिवाइडर से टकराकर पलट गई। हादसे में बिहार पुलिस के दारोगा, एक कैदी समेत 7 लोगों की मौत हो गई और 22 यात्री घायल हो गए। श्री सरोज ट्रैवल्स की स्लीपर में बस में लगभग 45 यात्री सवार थे। हादसे के समय अधिकांश लोग गहरी नींद में थे। तभी सुबह लगभग छह बजे औरास क्षेत्र के निंभाखेड़ा के पास चालक को झपकी आने से बस का पिछला हिस्सा अंडरपास के कंक्रीट डिवाइडर से टकरा गया।

राम रहीम को फिर 30 दिन की फरलो, 16वीं बार जेल से बाहर

रोहतक। रोहतक की सुनारिया जेल में सजा काट रहा बाबा राम रहीम आज सुबह 16वीं बार 30 दिन की फरलो पर बाहर आया। लैंड क्रूजर और फॉर्च्यूनर गाड़ियों में 6 बजकर 32 मिनट पर हनीप्रीत और अन्य के साथ सिरसा डेरे के लिए रवाना हो गया। साथ में पुलिस की गाड़ियां भी

रहीं। इससे पहले जनवरी में 40 दिन की पैरोल मिली थी। सिरसा डेरे में राम रहीम फरलो की अवधि बिताएगा। पंचकूला स्थित सीबीआई की विशेष अदालत ने 2017 में साध्वी यौन उत्पीड़न केस में राम रहीम को दोषी माना था। तभी से वह सुनारिया जेल में बंद है। प्रदेश सरकार ने उसे 30 दिन की फरलो दी थी। बार - बार छूट मिलने से सवाल भी उठते रहे हैं।

भाजपा अध्यक्ष के नाम पर ठगी विधायक से 10 हजार ऐंठ लिए

रायपुर। रायपुर में साइबर ठगी का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। रायपुर उत्तर से भाजपा विधायक पुरंदर मिश्रा को ठगों ने भाजपा के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारी नितिन नवीन के नाम का इस्तेमाल कर अपने जाल में फंसा लिया। आरोपी ने खुद को नितिन नवीन का निजी सहायक बताते हुए विधायक से पैसों की मांग की और 10 हजार रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर करवा लिए। मामले में खम्हारडीह थाना पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।आरोपी ने विधायक पुरंदर मिश्रा को फोन किया और खुद को भाजपा नेता नितिन नवीन का पीए बताया। डीजल डलवाने के लिएजरूरत बताई थी।

आज का कार्टून

असम की बेटी का मामला : प्रताड़ना की जानकारी के बावजूद भेजा ससुराल

शादी बचाने की चिंता बेटियों को मौत के जाल में धकेल रही है: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने एक व्यक्ति को दहेज के लिए पत्नी की हत्या करने के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाते हुए अहम् टिपण्णी की। कोर्ट कहा कि अपनी बेटियों की शादी बचाने की माता-पिता की चिंता कई महिलाओं को मौत के जाल में धकेलती है। वे प्रताड़ना की शिकायतों के बावजूद उन्हें उनके ससुराल वापस भेज देते हैं।

दहेज के मामलों की बढ़ती संख्या के बीच सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले की शुरुआत समाज के सामने एक सवाल रखकर की। जस्टिस पीके मिश्रा और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने पूछा, 'क्या युवा सोमा आचार्य की जान बचाई जा सकती थी? क्या सामाजिक बदनामी के डर की वजह से सोमा को भेड़ियों के हवाले कर दिया गया?

अदालत ने असम की रहने वाली सोमा आचार्य नाम की एक युवती की मौत के मामले में यह पाया कि उसने बार-बार अपने माता-पिता को अपने साथ हो रही प्रताड़ना के बारे में बताया था लेकिन पति के साथ सुलह कराने की कोशिश के बाद उसे वापस भेज दिया गया। इस मामले को आंखें खोलने वाला बताते हुए जस्टिस विश्वनाथन ने कहा, 'उसने बार-बार अपने माता-पिता से उसे बचाने की गुहार लगाई और यहां तक कि वह अपने मायके आकर भी कुछ दिनों तक उनके साथ रही। सोमा की शादी गौर आचार्य से हुई थी। 15 महीने बाद कहा गया कि उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

घरवालों ने रखी झूठी उम्मीद

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गांव के बड़े-बुजुर्ग इसमें शामिल थे और कथित समझौतों के बाद प्रस्ताव पारित किए गए थे। कोर्ट ने कहा, 'सोमा के अपने करीबी और प्रियजनों ने भोलेपन में यह मान लिया था कि किसी न किसी तरह हालात बेहतर हो जाएंगे। उन्हें एक झूठी उम्मीद ने घेर लिया था। उनकी उम्मीदें तब टूट गईं जब सोमा का उसके ससुराल में एक दुखद अंत हुआ।'

माता-पिता के नाम भावुक अपील

सुप्रीम कोर्ट ने देशभर के माता-पिता और अभिभावकों को अपनी सोच बदलने की नसीहत दी है। कोर्ट ने कड़े शब्दों में कहा कि कोई भी सामाजिक प्रतिष्ठा या लोकलाज किसी बेटी की अनमोल जान से बड़ी नहीं हो सकती। माता-पिता को अपनी बेटियों को यह भरोसा दिलाना होगा कि उनका मायका हमेशा उनके लिए खुला है। अगर ससुराल में किसी भी तरह का शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न हो रहा है, तो माता-पिता को अपनी बेटी को वापस अपने पास बुलाने में जरा भी संकोच नहीं करना चाहिए।

ट्विशा केस में जिला अदालत में सुनवाई

भोपाल। एक्ट्रेस और मॉडल ट्विशा शर्मा की मौत के मामले में कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) और सीसीटीवी फुटेज सुरक्षित रखने को लेकर आज भोपाल जिला कोर्ट में सुनवाई चल रही है। ट्विशा के परिवार की ओर से सीडीआर सुरक्षित रखने के लिए आवेदन दायर किया गया है, जबकि सास गिरिबाला सिंह की ओर से सीसीटीवी फुटेज संरक्षित रखने की मांग की गई है।

सीएनजी के भी दाम बढ़े, भोपाल में अब 94.75 रु. प्रति किलो

नई दिल्ली। पट्रोल - डीजल के बाद सीएनजी की दरों में दो रुपये की बढ़ोतरी से लोगों को महंगाई का बड़ा झटका लगा है। यह बीते 12 दिन में चौथी बार है जब सीएनजी के दाम बढ़ाए गए हैं। 12 दिन में 6 रुपये बढ़े हैं। इस ताजा बढ़ोतरी के बाद दिल्ली में अब सीएनजी 83.09 रुपये प्रति लीटर मिलेगी। मध्य प्रदेश 1 रूपए का फर्क पड़ा है। भोपाल में कीमत 94.75 रुपए प्रति किलो हो गई है। इससे परिवहन लागत में भी इजाफा होने की आशंका है। सरकार की ओर से इस मूल्य वृद्धि पर कोई तत्काल टिप्पणी नहीं आई है। ईंधन की कीमतों में यह उछाल दैनिक जीवन को प्रभावित कर रहा है। मध्यप्रदेश में इससे पहले 16 मई को करीब 3 रुपए प्रतिकिलो रेट बढ़े थे। फिलहाल थिंक गैस एजेंसी ने कीमतें बढ़ाई हैं। इसकी सप्लाई भोपाल समेत आसपास के जिलों में है। दो महीने में यह तीसरी बार बढ़ोतरी की गई है। तीन बार में सीएनजी 6 रुपए किलो तक महंगी हुई है।

सीजफायर के बीच अमेरिका का ईरान पर हमला

होर्मुज के पास मिसाइल साइट और बारूदी सुरंग बिछा रही बोट्स को निशाना बनाया

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच जारी सीजफायर वार्ता के बीच अमेरिकी सेना ने आज होर्मुज स्ट्रेट के पास बारूदी सुरंग बिछा रही बोट्स को निशाना बनाया। इसके अलावा बंदर अब्बास पोर्ट के पास सरफेस टू एयर मिसाइल साइट पर भी हमला किया।

अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) के मुताबिक यह कार्रवाई सेल्फ-डिफेंस यानी आत्मरक्षा में की गई। सेंटकाम के प्रवक्ता टिमोथी हॉकिन्स ने कहा कि अमेरिकी सैनिकों और युद्धपोतों को खतरे से बचाने के लिए ये हमले किए गए। अमेरिकी सेना का आरोप है कि बारूदी सुरंगें बिछाने से अंतरराष्ट्रीय जहाजों और अमेरिकी युद्धपोतों को खतरा हो सकता था। हालांकि, हॉकिन्स ने यह भी कहा कि सीजफायर के दौरान अमेरिका संयम बरत रहा है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि इस हमले से दोनों देशों की बातचीत में थोड़ी रुकावट जरूर पैदा कर सकती है, लेकिन फिलहाल शांति वार्ता रुकती नहीं दिख रही।

सीबीएसई पर लगातार उठ रहे हैं सवाल

छात्र की गलत कॉपी अपलोड होने पर बोर्ड ने स्वीकार की गलती, परिवार से किया संपर्क

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने कक्षा 12 की आंसर सीट के मूल्यांकन में गड़बड़ी स्वीकार की है। सोशल मीडिया पर एक छात्र की वायरल पोस्ट के बाद बोर्ड ने माना कि आंसर सीट के मूल्यांकन और अपलोडिंग में गलती हुई है, जिसके बाद संबंधित छात्रों के अंक संशोधित किए जाएंगे।

पूरा विवाद तब शुरू हुआ जब छात्र वेदांत ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दावा किया कि सीबीएसई की नई ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली के तहत जो फिजिक्स की आंसर सीट उसे दिखाई गई, वह उसकी नहीं थी। छात्र ने आरोप लगाया कि री-इवैल्यूएशन प्रक्रिया के दौरान किसी अन्य छात्र की कॉपी उसके नाम से अपलोड कर दी गई। इस खुलासे ने बोर्ड की मूल्यांकन प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए।

ऐसे आया मामला सामने

23 मई को वेदांत ने एक्स पर कई पोस्ट साझा करते हुए बताया कि उत्तर पुस्तिकाओं की फोटोकॉपी मिलने के बाद वह पूरी तरह टूट गया, क्योंकि फिजिक्स की कॉपी में लिखावट और उत्तर उसके नहीं थे। छात्र ने आशंका जताई कि ऐसी गलती से उसके अंक और कॉलेज एडमिशन दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

मेट्रो एंकर | सामजिक सरोकार की पहल, खेतों में काम करते समय अक्सर होते हैं हादसे

अनोखी शादी बनी मिसाल, मेहमानों को मिला दुर्घटना बीमा का रिटर्न गिफ्ट

छत्रपति संभाजीनगर, एजेंसी

महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले की एक शादी इन दिनों पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। यहां दूल्हे के परिवार ने पारंपरिक उपहारों से अलग हटकर ऐसा फैसला किया, जिसने शादी को केवल पारिवारिक आयोजन नहीं बल्कि सामाजिक सरोकार से जुड़ी मिसाल बना दिया। दूल्हे के परिवार ने गांव के सभी लोगों को दुर्घटना बीमा कवर उपहार में देने की पहल की।

नांदेड़ जिले के कंधार तालुका स्थित बहादुरपुरा गांव में सिद्धेश्वर पेठकर की शादी समारोह के दौरान यह अनूठा कदम उठाया गया। परिवार ने गांव के कुल 3,4 65 लोगों के लिए एक-एक लाख रुपये का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवर उपलब्ध कराने की घोषणा की। इस तरह कुल बीमा सुरक्षा राशि गभग 34.6 करोड़ रूपए तक पहुंच गई। शादी समारोह में सामान्य रूप से बारात, बैंड-बाजे और भोजन की व्यवस्था थी, लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा उस समय शुरू हुई जब लोगों को बताया गया कि उन्हें 'रिटर्न गिफ्ट' के रूप में दुर्घटना बीमा मिलेगा। ग्रामीणों के लिए यह किसी अप्रत्याशित उपहार से कम नहीं था।

परिवार के सदस्यों का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में काम करते समय दुर्घटनाएं, बिजली गिरने की घटनाएं और अन्य आकस्मिक हादसे सामने आते रहते हैं। ऐसे में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार अचानक संकट में आ जाते हैं। इसी सोच के साथ शादी की खुशी को सामाजिक सुरक्षा से जोड़ने का प्रयास किया गया। ग्रामीणों ने भी इस पहल की सराहना की। उनका कहना था कि आमतौर पर शादी में मिठाई, बर्तन या स्मृति चिन्ह दिए जाते हैं, लेकिन पहली बार किसी ने लोगों के भविष्य और सुरक्षा के बारे में सोचते हुए बीमा जैसा उपयोगी उपहार दिया है। यह पहल अब सोशल मीडिया पर भी चर्चा का विषय बनी हुई है और लोग इसे समाज के लिए प्रेरणादायक कदम बता रहे हैं। कई लोगों का मानना है कि यदि विवाह जैसे अवसरों को सामाजिक हित से जोड़ा जाए, तो ऐसे आयोजन समाज में सकारात्मक बदलाव का माध्यम बन सकते हैं।

सामूहिक बीमा पॉलिसी कराई

परिवार ने स्थानीय ग्राम पंचायत के नाम पर एक सामूहिक बीमा पॉलिसी लेने का फ़ैसला किया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी पात्र निवासियों को कवर मिले, गांव की मतदाता सूची बीमा कंपनी को सौंपी गई। जिससे यह पहल व्यवस्थित और समावेशी दोनों बन गई। इस बड़े प्रयास के बावजूद, पेठकर परिवार ने पॉलिसी के वित्तीय विवरणों को गोपनीय रखने का फ़ैसला किया है। सिद्धेश्वर ने कहा कि हमारी संस्कृति में दान का ढिंढोरा नहीं पीटा जाता। हम न तो कोई पहचान चाहते हैं और न ही कोई तारीफ। हम बस लोगों का आशीर्वाद पाना चाहते हैं।

सामाजिक विकास, शिक्षा और जनकल्याण के नाम पर काम कर रहे गैर-सरकारी संगठनों को लेकर खुलासा

सिर्फ 8148 संस्थाओं ने ही कराया वेरिफिकेशन प्रदेश में डेढ़ लाख NGO, 94% का रिकॉर्ड ही नहीं

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

मध्यप्रदेश में सामाजिक विकास, शिक्षा और जनकल्याण के नाम पर काम कर रहे गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) को लेकर बड़ा खुलासा सामने आया है। प्रदेश में पंजीकृत करीब डेढ़ लाख एनजीओ में से सिर्फ 8148 संस्थाओं ने ही केंद्र सरकार के नीति आयोग द्वारा संचालित 'एनजीओ दर्पण' पोर्टल पर खुद को पंजीकृत कराया है। यानी प्रदेश के 94 प्रतिशत से ज्यादा एनजीओ अब भी केंद्र की डिजिटल वेरिफिकेशन व्यवस्था से बाहर हैं। स्थिति इसलिए गंभीर मानी जा रही है क्योंकि केंद्र सरकार ने सरकारी अनुदान, टेंडर, परियोजनाओं और कई वित्तीय प्रक्रियाओं के लिए दर्पण आईडी को अनिवार्य कर दिया है। इसके बिना किसी भी संस्था को सरकारी योजनाओं और प्रोजेक्ट्स के लिए पात्र नहीं माना जाता।

हैरानी की बात यह है कि दर्पण पोर्टल पर पंजीयन की प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन और निशुल्क है। इसके लिए किसी तरह का सरकारी शुल्क नहीं देना पड़ता। इसके बावजूद बड़ी संख्या में संस्थाएं अब भी अपनी प्रशासनिक और वित्तीय जानकारी सरकार के डिजिटल रिकॉर्ड में दर्ज नहीं करा रही हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि पारदर्शिता, वित्तीय जवाबदेही और फंडिंग स्रोतों की निगरानी बढ़ने के कारण कई संस्थाएं डिजिटल वेरिफिकेशन से दूरी बनाए हुए हैं।

रजिस्टर होती तो पता चल पाता- कितनी सिर्फ कागजों पर सक्रिय हैं, फंड कहां से मिल रहा है?

क्या है दर्पण पोर्टल? नीति आयोग का राष्ट्रीय डिजिटल प्लेटफॉर्म। हर संस्था को यूनिक आईडी मिलती है सरकारी फंडिंग के लिए यह जरूरी पहचान है। इसमें संस्था की वित्तीय और प्रशासनिक जानकारी दर्ज होती है। मंत्रालय और विभाग यहीं से वेरिफिकेशन करते हैं।

दर्पण पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन से क्या पता चलेगा?

- कौन सी संस्थाएं वास्तव में सक्रिय हैं और कौन सिर्फ कागजों पर चल रही हैं?
- किस संस्था को कहां से फंड मिल रहा है? पैसा किस काम में खर्च हो रहा है? कौन सी संस्थाएं वर्षों से अपडेट ही नहीं हुईं?

सरकारी फंड चाहिए तो पहले दर्पण आईडी जरूरी

प्रदेश की कई संस्थाएं सांसद-विधायक निधि, सीएसआर फंड, विदेशी संस्थाओं, ऑनलाइन क्राउड फंडिंग, नाबार्ड, सिडबी और महिला स्व-सहायता समूहों से जुड़ी योजनाओं के जरिए आर्थिक सहायता प्राप्त करती हैं। सीएसआर, विदेशी फंडिंग (एफसीआरए) व आयकर अधिनियम की 12 व 80त्न जैसी मान्यताओं में भी इसे महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जा रहा है। यानी सरकारी फंड चाहिए तो दर्पण आईडी जरूरी है। ऐसे में सवाल यह है कि इन संस्थाओं को फंडिंग कहां से मिल रही है? बैंकिंग और केवाईसी नियम सख्त होने के बाद अब गैर-पंजीकृत संस्थाओं की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि किसी एनजीओ की जानकारी सरकारी डिजिटल रिकॉर्ड में नहीं होगी, तो उसके बैंक खाते और वित्तीय लेन-देन भी सवालों के घेरे में आ सकते हैं। आईसीएआई भोपाल के पूर्व चेयरमैन अंशुल अग्रवाल के अनुसार, यदि संस्थाएं दर्पण पोर्टल पर पंजीकृत नहीं हैं तो यह नियमों के उल्लंघन की स्थिति है। भविष्य में केवाईसीअपडेट के दौरान ऐसी संस्थाओं के बैंक खातों पर भी असर पड़ सकता है। सिर्फ रजिस्ट्रेशन नहीं, हर बदलाव अपडेट करना भी जरूरी... दर्पण पोर्टल पर सिर्फ एक बार जानकारी देने से काम नहीं चलेगा। संस्था की नई कार्यकारिणी, पदाधिकारियों और प्रशासनिक बदलावों की जानकारी भी नियमित अपडेट करनी होगी। सोसायटी एक्ट की धारा 27-28 के तहत नई कार्यकारिणी बनने पर उसकी जानकारी दर्पण पोर्टल पर देना अनिवार्य होगा। सरकार अब फंड जारी करने से पहले यहीं से डिजिटल वेरिफिकेशन करेगी।

जनजातीय छात्रावासों में तीन माह से सस्ता राशन नहीं, उधारी में चल रहा काम

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

प्रदेशभर में सरकारी तौर पर संचालित तीन सौ से अधिक अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्रावासों को तीन माह (मार्च, अप्रैल, मई) से सस्ता अनाज और चावल आपूर्ति नहीं हुई है। ऐसे में छात्रावास अधीक्षकों को उधारी में गेहूं-चावल खरीदकर छात्रों को भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। इसको लेकर खाद्य और नागरिक उपभोक्ता संरक्षण एवं जनजातीय कार्य विभाग एक-दूसरे के पाले में गेंद डाल रहे हैं। एससी/एसटी हॉस्टल्स में खाद्य एवं नागरिक उपभोक्ता संरक्षण विभाग के जरिए सरकारी राशन दुकानों से 1 रुपए किलो में गेहूं और चावल उपलब्ध कराने का प्रावधान है। इस सुविधा का लाभ उठाने वाले राजधानी भोपाल में 21 और प्रदेशभर में 343 हॉस्टल्स हैं, जिनमें 22 हजार छात्र हैं। विभाग के संचालक कर्मवीर शर्मा से कई बार संपर्क किया, लेकिन हो नहीं सका। राजधानी में ग्रीष्मावकाश में चल रहे 21 अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कॉलेजिएट हॉस्टल्स में वर्ष 2026 के माह मार्च, अप्रैल और मई में खाद्यान्न नहीं मिलने की जानकारी सामने आई है। इन छात्रावासों में 1,200 से अधिक छात्र-छात्राएं निवास कर रहे हैं।

भोपाल में ई-बाइक प्रोजेक्ट हुआ फेल

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

देशभर में लगातार बढ़ते पेट्रोल-डीजल के दामों के बीच केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार ईवी और ग्रीन ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं। दूसरी ओर राजधानी भोपाल में करीब 3 करोड़ रुपये खर्च कर शुरू किया गया। ई-बाइक और पब्लिक साइकिल प्रोजेक्ट आज पूरी तरह बंद पड़ा है।

कभी ग्रीन भोपाल की पहचान बताई गई यह योजना अब बंद स्टैंड, गायब साइकिलों और कबाड़ बन चुकी ई-बाइकों तक सिमटकर नगर निगम की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर रही है। साल 2017 में स्मार्ट सिटी भोपाल के तहत शुरू की गई यह देश की पहली स्वचालित साइकिल शेयरिंग प्रणाली थी। परियोजना पर करीब तीन करोड़ रुपये खर्च किए गए थे और जर्मनी से लगभग 500 साइकिलें मंगाई गई थीं। शहर के प्रमुख स्थानों पर स्टैंड बनाए गए थे। शुरुआत में इसे लेकर काफी प्रचार हुआ और दावा किया गया कि इससे पेट्रोल-

डीजल पर निर्भरता कम होगी तथा लोग छोटे सफर के लिए साइकिल और ई-बाइक का उपयोग करेंगे। लेकिन कुछ ही वर्षों में योजना की वास्तविक तस्वीर सामने आ गई। कई स्टैंड खाली पड़े हैं, अधिकांश साइकिलें खराब हो चुकी हैं और ऐप आधारित डिजिटल सिस्टम भी लगभग निष्क्रिय हो गया है। नगर निगम ने चुपचाप अधिकांश साइकिलों और ई-बाइकों को वापस अपने गोदामों में रखवा दिया। विशेषज्ञों और शहरवासियों का मानना है कि इस योजना की असफलता के पीछे खराब प्लानिंग के साथ लोगों की कम रुचि भी एक बड़ा कारण रही। हालांकि योजना को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाए गए, लेकिन इसके बावजूद आम नागरिकों का अपेक्षित समर्थन नहीं मिल सका। वहीं, शहर में कई स्थानों पर साइकिल ट्रैक अधूरे रह गए या उन पर अतिक्रमण और अवैध पार्किंग का कब्जा हो गया। ऐसे में सुरक्षित ट्रैक उपलब्ध न होने के कारण लोग व्यस्त सड़कों पर साइकिल चलाने से बचते रहे, जिससे यह प्रोजेक्ट धीरे-धीरे लोगों की प्राथमिकता से बाहर हो गया। विडंबना यह है कि एक ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार ईवी और ग्रीन मोबिलिटी को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भोपाल में करोड़ों की यह योजना बिना जवाबदेही के दम तोड़ चुकी है।

फिर से साइकिल शुरू करने की योजना

स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत शुरू की गईं साइकिलें नुकसान में चल रही थीं, जिस कारण उन्हें वापस ले लिया था। जिन रूट्स पर प्रॉफिट हो रहा था उन्हें चिह्नित कर अब फिर से साइकिल शुरू करने की योजना बनाई जा रही है। अंजू अरुण कुमार, सीईओ स्मार्ट सिटी

सीएम के काफिले में बड़ा बदलाव, नई स्वदेशी इलेक्ट्रिक कार से चलेंगे डॉ. मोहन यादव

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

पीएम नरेंद्र मोदी की पेट्रोल-डीजल बचाने की अपील का एमपी में व्यापक असर दिखाई दे रहा है। कई मंत्री और विधायक, कारों का अपना बड़ा काफिला छोड़ चुके हैं। कुछ जनप्रतिनिधियों ने तो बाकायदा ईवी स्कूटी तक खरीद ली है, यहां तक कि विधायक व मंत्री पैदल चलते नजर आ रहे हैं। पीएम नरेंद्र मोदी की अपील के बाद सीएम डॉ. मोहन यादव ने भी अपना काफिला घटा दिया है। वे अब पेट्रोल-डीजल की कार छोड़कर इलेक्ट्रिक गाड़ी की सवारी करेंगे। सीएम के लिए स्टेट मोटर गैरेज ने स्वदेशी नई इलेक्ट्रिक कार खरीद ली है। सोमवार को नई गाड़ी सीएम हाउस में पहुंच गई।

सीएम की सुरक्षा से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार अब नई गाड़ी को सीएम के कारकेड में शामिल करने से पहले उसके सुरक्षा मानकों को जांचा जाएगा। इस दौरान ईवी के मुताबिक ड्राइवर को भी ट्रेंड किया जाएगा। उसके बाद जल्द ही यह ईवी गाड़ी सीएम के कारकेड में शामिल होगी। सीएम डॉ यादव ने पीएम की अपील के बाद अपने कॉरकेड को छोटा करते हुए गाडियों की संख्या घटा दी। इस बीच ईवी के अनुरूप चार्जिंग व अन्य व्यवस्थाओं की तैयारी शुरू हो चुकी है। बता दें, सीएम डॉ यादव ने पीएम की अपील के बाद अपने कॉरकेड को छोटा करते हुए गाडियों की संख्या घटा दी थी। पेट्रोल-डीजल की कमी को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बचत की नसीहत दी थी। वे स्वयं इसका पालन भी रहे हैं। उनकी अपील के बाद एमपी के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी अपने कारकेड में वाहन कम कर दिए हैं। मंत्रियों को भी सलाह दी गई है कि वे तामझाम से दूर रहें। सादगी के साथ जाएं और ईंधन बचाएं। प्रदेश में मंत्रियों के काफिलों से आमजन परेशान होते रहे हैं। काफिले के वाहनों की लंबी फौज के चलते कई जगह जाम के हालात भी बनते हैं। यातायात पुलिस प्रायः रोड का ट्रैफिक रोक कर मंत्रियों, विधायकों के काफिले को निकालती है। इस दौरान राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

पेट्रोलिंग के दौरान मिली थी सूचना

ईरानी डेरे तक भागा 10 हजार का इनामी बदमाश गिरफ्तार

एनडीपीएस केस में फरवरी से फरार था आरोपी

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

राजधानी भोपाल के निशातपुरा इलाके में पुलिस ने 10 हजार रुपए के इनामी फरार बदमाश को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी पुलिस से बचने के लिए ईरानी डेरे तक पहुंच गया था, जहां से उसे घेराबंदी कर पकड़ा गया। पुलिस के मुताबिक गिरफ्तार आरोपी की पहचान हबीब हसमत अली उर्फ राजू ईरानी के भाई के रूप में हुई है। वह एनडीपीएस एक्ट के एक मामले में फरवरी से फरार चल रहा था। इस केस में उसकी पत्नी नाजमा अली मुख्य आरोपी है, जबकि हबीब उस अवैध गतिविधि में सहयोगी की भूमिका निभा रहा था। निशातपुरा पुलिस को पेट्रोलिंग के दौरान आरोपी के इलाके में होने की

सूचना मिली। इसके बाद पुलिस टीम ने सक्रियता दिखाते हुए उसका पीछा किया और ईरानी डेरे के पास दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, इलाके में पथराव की बात सामने आई थी, लेकिन पुलिस अधिकारियों ने इसे सिरे से खारिज करते हुए कहा कि गिरफ्तारी शांतिपूर्वक की गई। पुलिस ने बताया कि आरोपी के खिलाफ पहले से एक वारंट भी जारी था। गिरफ्तारी के बाद उसे न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

आज बजेगा सायरन, दौड़ेंगी एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में आज आपदा प्रबंधन की तैयारियों को परखने के लिए एक विशेष मॉक ड्रिल आयोजित की जा रही है। इस अभ्यास का उद्देश्य विभिन्न विभागों के बीच तालमेल को बेहतर बनाना और आपात स्थिति में प्रतिक्रिया क्षमता को जांचना है। शहर के कई इलाकों में अचानक सायरन की आवाज सुनाई दे सकती है और एंबुलेंस, फायर ब्रिगेड तथा राहत वाहनों की आवाजाही बढ़ सकती है। जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि यह पूरी तरह से पूर्व नियोजित अभ्यास है और नागरिकों को किसी भी तरह की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

भोपाल के अलग अलग हिस्सों में आज आपदा जैसी स्थिति का अभ्यास किया जाएगा। कई जगहों पर अचानक सायरन बजेंगे, जिससे कुछ समय के लिए ऐसा लगेगा जैसे कोई आपात स्थिति हो गई हो। इसी दौरान एंबुलेंस, फायर ब्रिगेड और राहत कार्यों से जुड़े वाहन लगातार सक्रिय रहेंगे। इस पूरे अभ्यास का उद्देश्य यह देखना है कि किसी असली आपदा के समय प्रशासन और अन्य एजेंसियां कितनी तेजी से प्रतिक्रिया दे सकती हैं। शहर के कई स्थानों पर रेस्क्यू और राहत कार्यों का लाइव अभ्यास भी किया जाएगा।

मॉक ड्रिल के दौरान राहत और बचाव टीमों की कार्यक्षमता को परखा जाएगा। फायर ब्रिगेड, पुलिस और मेडिकल टीमें मिलकर एक साथ काम करेंगी। इस दौरान यह देखा जाएगा कि किसी आपात स्थिति में सभी विभाग कितनी तेजी और समन्वय के साथ काम करते हैं। कुछ स्थानों पर सर्च और रेस्क्यू ऑपरेशन जैसे अभ्यास भी किए जाएंगे, जो बिल्कुल वास्तविक आपदा जैसी स्थिति का अनुभव देंगे। इससे टीमों की तैयारी और उनकी प्रतिक्रिया क्षमता का मूल्यांकन किया जाएगा। जिला प्रशासन ने नागरिकों से स्पष्ट रूप से अपील की है कि वे किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान न दें। यह पूरी प्रक्रिया केवल एक प्रशिक्षण अभ्यास है।

बीयू में शोध कार्यों की रफ्तार धीमी, करोड़ों का बजट भी नहीं हो पा रहा खर्च

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय (बीयू) में शोध कार्यों की स्थिति लगातार चिंताजनक होती जा रही है। शासन की ओर से विश्वविद्यालय को रिसर्च और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए करोड़ों रुपये का बजट दिया जा रहा है, लेकिन धरातल पर शोध कार्य बेहद धीमी गति से हो रहे हैं।

पिछले पांच वर्षों में विश्वविद्यालय में केवल 524 शोध कार्य पूरे हुए हैं। इनमें भी वर्ष 2023-24 में सबसे कम मात्र 97 शोध कार्य दर्ज किए गए, जिससे विश्वविद्यालय की शोध व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

1.30 करोड़ का बजट, खर्च हुए सिर्फ 3.29 लाख

विश्वविद्यालय के वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान में शोध कार्यों के लिए 1.30 करोड़ रुपये का विशेष प्रविधान किया गया था। इस राशि का उपयोग शोध परियोजनाओं, लैब अपग्रेड, फील्ड स्टडी, सेमिनार और रिसर्च पब्लिकेशन को बढ़ावा देने के लिए किया जाना था। हालांकि वित्तीय वर्ष के नौ महीने बीत जाने के बाद अप्रैल से दिसंबर 2024 के बीच इस मद में केवल 3.29 लाख रुपये ही खर्च किए गए। स्थिति इतनी खराब है कि संशोधित बजट जारी होने के बाद यह मान लिया गया कि पूरे साल में भी शोध कार्यों पर सिर्फ 4.38 लाख रुपये ही खर्च हो पाएंगे।यानी कुल बजट का लगभग 97 प्रतिशत हिस्सा रिसर्च तक पहुंच ही नहीं सका।

विश्वविद्यालय में फैकल्टी के आधे पद खाली है।कई विभागों में शोध के लिए जरूरी संसाधनों का अभाव बना हुआ है। विज्ञान संकाय के विभागों में केमिकल तक उपलब्ध नहीं हैं, जबकि प्रयोगशालाओं के कई उपकरण आउटडेटेड हो चुके हैं।

विश्व विद्यालयों की स्थिति पर उठे सवाल

केंद्र और राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के विश्वविद्यालयों को हर साल करोड़ों रुपये का बजट दिया जा रहा है, लेकिन इसके बावजूद रिसर्च के क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आ रहे हैं। बीयू की स्थिति यह दर्शाती है कि शोध कार्यों के नाम पर केवल कागजी खानापूर्ति हो रही है। विश्वविद्यालय का कुल वार्षिक बजट करीब 92 से 95 करोड़ रुपये है, लेकिन शोध पर वास्तविक खर्च महज 0.05 प्रतिशत तक सीमित रह गया है। इससे उच्च शिक्षा और शोध की गुणवत्ता पर गंभीर प्रभाव पड़ने की आशंका जताई जा रही है।

बेहतर प्रोजेक्ट को स्वीकृत होगा बजट

विवि में रिसर्च के लिए विशेष बजट रखा है। विभागाध्यक्षों से और प्रोजेक्ट देने के लिए कहा गया है। बेहतर प्रोजेक्ट को स्वीकृत कर बजट दिया जाएगा। प्रो. समर सिंह, कुलसचिव,रजिस्ट्रार, बीयू

कुलगुरु सुरेश कुमार जैन ने विभागों को रिसर्च और नवाचार से जुड़े प्रोजेक्ट तैयार करने के निर्देश दिए थे। कुछ विभागों ने प्रस्ताव तैयार कर प्रबंधन को भेजे भी, लेकिन उन्हें आवश्यक बजट नहीं मिल पाया।

मेट्रो एंकर — भोपाल एम्स में पांच महीने से बंद पड़ी कैंसर जांच मशीन, मरीजों पर बढ़ा बोझ

कैंसर मरीजों को निजी लैब में कराने पड़ रहे महंगे टेस्ट

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), भोपाल में कैंसर मरीजों की जांच व्यवस्था गंभीर संकट से गुजर रही है। पैथोलाजी विभाग की अत्याधुनिक आईएचसी (इम्यूनोहिस्टोकेमिस्ट्री) मशीन पिछले पांच महीनों से तकनीकी खराबी के कारण बंद पड़ी है।

इस मशीन के बंद होने से कैंसर मरीजों के सटीक डायग्नोसिस और इलाज में भारी देरी हो रही है। गरीब और मध्यमवर्गीय मरीजों को मजबूरी में निजी लैबों का रुख करना पड़ रहा है, जहां जांच के लिए हजारों रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं।

डॉक्टरों के अनुसार आईएचसी

जांच कैंसर के प्रकार और उसकी स्टेज पहचानने के लिए बेहद जरूरी होती है। इसी रिपोर्ट के आधार पर मरीज की कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी या सर्जरी की योजना तय की जाती है। मशीन बंद होने से मरीजों की रिपोर्ट समय पर नहीं मिल पा रही है, जिससे इलाज में देरी हो रही है। एम्स में यह जांच पहले बेहद कम और रियायती दरों पर उपलब्ध थी, लेकिन अब मरीजों को निजी डायग्नोस्टिक सेंटरों में 4,000 से 8,000 रुपये तक खर्च करने पड़ रहे हैं। आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों के लिए यह स्थिति और अधिक परेशानी पैदा कर रही है।

सतना से अपनी मां का इलाज कराने आए शिवोय तिवारी ने बताया कि डाक्टर ने उनकी मां की आईएचसी जांच लिखी थी, लेकिन अस्पताल में मशीन खराब होने की जानकारी मिली। मजबूरी में उन्हें निजी लैब से महंगी जांच करानी पड़ी। मरीजों और उनके परिजनों का कहना है कि एम्स जैसे बड़े सरकारी संस्थान में महीनों तक मशीन बंद रहना गंभीर लापरवाही है। इससे गरीब मरीजों का भरोसा भी प्रभावित हो रहा है।

जांचों में भी लंबा करना पड़ रहा इंतजार

एम्स भोपाल में सिर्फ आईएचसी जांच ही प्रभावित नहीं है, बल्कि अन्य महत्वपूर्ण जांचों के लिए भी मरीजों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है। कैंसर मरीजों के लिए होने वाले पेट स्कैन की तारीख दो से तीन महीने बाद मिल रही है। वहीं एमआरआई जांच के लिए मरीजों को चार से पांच महीने तक इंतजार करना पड़ रहा है। सामान्य मरीजों को भी सीटी स्कैन के लिए 15 से 30 दिन बाद की तारीख दी जा रही है। गंभीर मरीजों के परिजन जल्द जांच के लिए लगातार अस्पताल प्रबंधन से गुहार लगा रहे हैं।

मध्य प्रदेश की 207 में से 175 नदियां हुईं बरसाती, 27 पूरी तरह सूखी

बूंद-बूंद को तरस रहा नदियों का मायका...

मध्य प्रदेश की 207 नदियों के अस्तित्व पर है संकट

32 नदियों में से 27 का उद्गम स्थल पूरी तरह सूखा

भोपाल, दोपहर मेट्रो

नदियों का मायका कहे जाने वाले मध्य प्रदेश की गोद आज सूखी है और उसकी अपनी संतानें कंठ के सूखे मरुस्थल में बूंद-बूंद पानी के लिए छटपटा रही हैं। जिसे हम अपनी आस्था, संस्कृति और जीवन का उद्गम मानते थे, आज वही प्रदेश पानी की एक-एक बूंद के लिए विवश और लाचार खड़ा है। यह केवल इस साल के पारे का बढ़ता हुआ क्रूर मिजाज नहीं है, बल्कि यह हमारी उस सामूहिक अनदेखी, अनियोजित विकास की अंधी दौड़ और प्रकृति के संतुलन से खिलवाड़ का एक भयावह और कड़वा दस्तावेज है, जिसे अब और नजरअंदाज करना नामुमकिन हो चुका है।

जब हम देश के नक्शे पर मध्य प्रदेश को निहारते हैं, तो हमें पहाड़ों के सीने को चीरकर बहती कल-कल करती नदियां दिखाई देती हैं। लेकिन आज यह केवल एक सुंदर अतीत की स्मृतियां मात्र बनकर रह गई हैं। हकीकत की धरातल पर मध्य प्रदेश की जीवन रेखा मानी जाने वाली मां नर्मदा ही नहीं, बल्कि इस धरती को अपने आंचल से सींचने वाली 207 छोटी-बड़ी नदियां आज अपने ही अस्तित्व की अंतिम और सबसे कठिन लड़ाई लड़ रही हैं। इस भीषण जल संकट की भयावहता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मध्य प्रदेश की करीब 207 नदियों में से 175 नदियां पूरी तरह बरसाती हो चुकी हैं। जो कभी अपने वेग से खेतों को सींचती थीं, वे अब केवल मानसून के दो-तीन महीनों में ही अपनी सांसें बहाल रख पाती हैं। सबसे ज्यादा चिंताजनक स्थिति उन 32 प्रमुख नदियों की है, जो इतिहास के पन्नों में साल भर अविरल बहने के लिए जानी जाती थीं।

विकास की अंधी भूख लील गई प्रकृति की अनमोल धरोहर को

खुद राज्य के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रह्लाद पटेल ने इस कड़वे सच का खुलासा करते हुए समाज को एक गंभीर चेतावनी दी है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि यदि लोगों ने मौजूदा जल संरचनाओं को बचाने के लिए खुद को एक जन-आंदोलन से नहीं जोड़ा, तो भविष्य में आने वाले विनाशकारी संकट की बस कल्पना ही की जा सकती है। इंसान के विकास की अंधी भूख ने प्रकृति की इस अनमोल धरोहर को लील लिया है। आज मध्य प्रदेश की धसान, केन, सिंध, कूनो, शिप्रा, कान्ह, स्वर्ण और तमस जैसी नदियां पूरी तरह से सूख चुकी हैं। चाहे पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली नर्मदा, माही और ताप्ती हो या दक्षिण से उत्तर की ओर बहने वाली काली सिंध, चंबल, पार्वती और बेतवा; आप किसी भी नदी के किनारे घूम आइए, हर तरफ आपको सिर्फ सिकुड़ती धार, तपती रेत और सूखती हुई सभ्यताएं ही नजर आएंगी।

खतरे के मुहाने पर जीवनदायिनी मां नर्मदा

मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के करोड़ों लोगों की प्यास बुझाने वाली मां नर्मदा को इस पावन धरती पर देवी का दर्जा प्राप्त है। यह नदी मध्य प्रदेश के 16 जिलों में 1077 किलोमीटर की लंबी दूरी तय करती है और एक विशाल आबादी के जीवन का आधार है। अनूपपुर जिले के अमरकंटक में मैकाल पर्वत से निकलने वाली यह पवित्र नदी पश्चिम की ओर बहकर खंभात की खाड़ी में अरब सागर से मिलती है। लेकिन आज इंसानी लालच के कारण इस विराट नदी के अस्तित्व पर भी ग्रहण लग चुका है। कई पर्यावरणविदों ने चेतावनी दी है कि यदि यही हालात रहे, तो अगले 30 सालों में मां नर्मदा का प्रवाह भी इतिहास बन जाएगा। नर्मदा नदी अमरकंटक के जिस झरने से निकलती है, वहां मूल रूप से बहुत कम पानी है। जैसे-जैसे यह आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे इसमें कई छोटी-छोटी सहायक नदियां आकर मिलती हैं, जो इसे एक विशाल और भव्य स्वरूप प्रदान करती हैं। लेकिन आज नर्मदा की यही सहेलियां और सहायक नदियां इंसानी बस्तियों के विकास, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और अवैध रेत उत्खनन की भेंट चढ़ चुकी हैं। ओमनी, सिंगरी, पलकमती, देनवा, गंजाल, दूधी, तवा, तेंदुबी, वारना, हिरन, कानर और हथिनी जैसी सहायक नदियां या तो पूरी तरह सूख चुकी हैं या फिर अपनी अंतिम सांसें गिन रही हैं। जब सहायक नदियां ही सूखी पड़ जाएंगी, तो मुख्य धारा को जीवन कहां से मिलेगा? अमेरिका के वर्ल्ड रिसोर्स इंस्टिट्यूट ने इसी भयावह स्थिति को देखते हुए नर्मदा को दुनिया की उन 6 सबसे संकटग्रस्त नदियों में शामिल किया है, जिनका भविष्य घोर अंधकार में है।

30 वर्षों में नर्मदा का प्रवाह इतिहास बनने का डर

बूंद-बूंद को तरसती जिंदगी

भीषण गर्मी के इस दौर में जब आसमान से आग बरस रही है, तब प्रदेश के ग्रामीण अंचलों से आ रही तस्वीरें किसी भी संवेदनशील हृदय को झकझोर कर रख देने के लिए काफी हैं। आज मध्य प्रदेश के आधे से ज्यादा हिस्से में पेयजल व्यवस्था की कागजी हकीकत पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है। ग्रामीण भारत की महिलाएं आज अपनी जान जोखिम में डालकर पानी की जुगत में लगी हैं। कहीं 60 से 70 फीट गहरे और सूखे कुओं के भीतर बिना किसी सुरक्षा उपकरण के, केवल एक रस्सी के सहारे उतरती मां-बेटियों की तस्वीरें रोंगटे खड़ी कर देती हैं, तो कहीं सूखी और मृतप्राय हो चुकी नदियों की तलहटी में घंटों हाथों से रेत को कुरेदकर, झिरी (छोटे गड्ढे) बनाकर मटमैला और दूषित पानी छानते हुए मासूम बच्चे दिखाई देते हैं। दावों की फाइलों में तो हर घर में नल लग चुके हैं, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि पाइपलाइन सूखी हैं, मोटरें जल चुकी हैं और टंकियां केवल सफेद हाथी बनकर खड़ी हैं। अंधाधुंध दोहन के कारण भूजल स्तर रसातल में चला गया है, जिसके कारण हजारों हैंडपंपों ने पानी की जगह केवल सूखी हवा उगलना शुरू कर दिया है। दूषित पानी पीने की मजबूरी से गांवों में महामारियों का डर बढ़ गया है और ग्रामीणों का यह आक्रोश अब चक्काजाम और उग्र प्रदर्शनों के रूप में सड़कों पर उबल रहा है।

कैसे लौटेगी मायके की हरियाली

इस पूरे संकट को देखते हुए हमें एक गंभीर आत्मचिंतन और समझाइश की आवश्यकता है। हमें यह गहराई से समझना होगा कि पानी का यह संकट केवल प्रकृति की बेरुखी नहीं, बल्कि हमारे अपने कर्तव्यों की विफलता है। जब तक हम पानी को केवल सरकार की जिम्मेदारी मानकर खुद को इससे अलग रखेंगे, तब तक कोई भी शासकीय योजना हमारी प्यास नहीं बुझा सकती।

जल संचयन को बनाएं जीवन शैली: आने वाले मानसून में हमें हर घर की छत पर वर्षा जल संचयन को एक नैतिक और सामाजिक नियम बनाना होगा, ताकि आकाश से बरसने वाली एक-एक बूंद धरती के सीने में समा सके और भूजल स्तर ऊपर उठ सके।

सहायक नदियों का पुनरुद्धार: मुख्य नदी को बचाने के लिए उसकी सहायक छोटी नदियों और नालों को पुनर्जीवित करना होगा। उनके उद्गम स्थलों पर सघन वृक्षारोपण करना होगा, क्योंकि जंगलों की जड़ें ही पानी को रोककर नदियों को सदानीरा बनाती हैं।

प्रदूषण और खनन पर पूर्ण विधिक अंकुश: नदियों में सीधे गिरने वाले सीवेज और फैक्ट्रियों के गंदे पानी पर पूरी तरह रोक लगानी होगी। साथ ही, रेत और पत्थरों के अवैध उत्खनन के खिलाफ कठोर दंडात्मक विधिक कार्रवाई करनी होगी, ताकि नदियों का प्राकृतिक जलभृत सुरक्षित रह सके।

चंबल की सिकुड़ती धार और ताप्ती का संताप

मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमाओं को अपनी लहरों से विभाजित करने वाली प्राचीन और ऐतिहासिक चंबल नदी का दायरा भी दिन-ब-दिन सिकुड़ता जा रहा है। बड़ी मात्रा में पत्थरों के अवैध उत्खनन और ब्लास्टिंग ने नदी के प्राकृतिक तंत्र को छिन्न-भिन्न कर दिया है। चंबल की मुख्य ताकत उसकी सहायक नदियां थीं, जिनमें बनास, क्षिप्रा, काली सिंध, पार्वती, छोटी कालीसिंध, कुनो, ब्राह्मणी, परवन, अलनिया और रेतम शामिल हैं। आज ये सभी सहायक नदियां इंसानी अतिक्रमण के कारण दम तोड़ चुकी हैं। परिणाम यह है कि मानसून के चंद महीनों को छोड़कर बाकी के पूरे साल चंबल की जगह केवल सूखी और डरावनी पथरीली चट्टानें ही दिखाई देती हैं। यही संताप सूर्यपुत्री मानी जाने वाली ताप्ती नदी का भी है। मध्य प्रदेश की बड़ी नदियों में शुमार ताप्ती का जलस्तर लगातार घट रहा है। प्रदूषण और अनियोजित बांधों के निर्माण ने इसकी स्वाभाविक गति को रोक दिया है। इसकी भी लगभग सभी सहायक नदियां सूख चुकी हैं। सरकार इसकी सफाई और पुनरुद्धार पर करोड़ों रुपये पानी की तरह बहा चुकी है, लेकिन धरातल पर भ्रष्टाचार और प्रशासनिक उदासीनता के कारण ताप्ती की धार लगातार पतली और मैली होती जा रही है।

कृषि जमीन पर उत्खनन के बाद अब माइनिंग परमिशन का खेल

ग्वालियर में हुआ 250 फीट अवैध खनन निकाला करोड़ों का पत्थर, सोता रहा विभाग

ग्वालियर, दोपहर मेट्रो

ग्वालियर जिले के बिलौआ इलाके में पर्यावरण और कानून के नियमों को दफन कर करोड़ों रुपए की खनिज चोरी का एक बड़ा घोटाला उजागर हुआ है। एक क्रेशर संचालक ने बिना किसी अनुमति के निजी व कृषि जमीन पर 200 फीट से ज्यादा गहरा खोदकर अवैध उत्खनन कर करोड़ों रुपए का पत्थर साफ कर दिया।

इस भ्रष्टाचार में हैरान करने वाली बात यह है कि बिना अनुमति के इतना बड़ा डेथ ट्रैप (मौत का कुआं) बनने के बावजूद खनिज विभाग सोता रहा और अब उसी खुदी हुई जमीन को वैध करने के लिए बकायदा लोक सुनवाई तक की प्रक्रिया शुरू करा दी गई। हद तो तब हो गई जब बिना मौके पर भौतिक निरीक्षण किए सैद्धांतिक अनुमति तक मिल गई। जब इस मामले की शिकायत कलेक्टर ग्वालियर के पास पहुंची, तब जाकर खनिज विभाग में हड़कंप मचा। अब विभाग के जिम्मेदार अधिकारी अजीबोगरीब और हास्यास्पद दलीलें दे रहे हैं। कोई गलती से खुदाई होने की बात कहते हुए भ्रष्टाचार पर पर्दा डालते हुए नजर आ रहा है। मिली जानकारी के अनुसार, मेसर्स राजेन्द्र प्रसाद खण्डेलवाल द्वारा ग्राम बिलौआ के तीन प्रमुख सर्वे नंबरों पर पत्थर (गिट्टी) उत्खनन की नई अनुमति मांगी गई है। प्रभावित सर्वे नंबर- 3578/2/1, 3575/1/2 एवं 3570/1 (कुल रकबा 2.315 हेक्टेयर) हैं। चौंकाने वाला सच यह है कि इस जमीन पर माइनिंग की पर्यावरणीय स्वीकृति की फाइल अभी पास भी नहीं हुई थी, लेकिन क्रेशर संचालक ने यहां कई महीनों पहले ही भारी मशीनें उतारकर करीब 200 से 250 फीट गहरे गड्ढे कर दिए।

रॉयल्टी का 30 गुना जुर्माना दबाने की साजिश

खनिज नियमों के मुताबिक, यदि कोई बिना अनुमति के अवैध उत्खनन करता है, तो पकड़े जाने पर कुल खनिज और रॉयल्टी का 30 गुना जुर्माना वसूलने का प्रावधान है। यह राशि करोड़ों रुपये बैठती है। बिलौआ के इस खेल में अधिकारियों ने क्रेशर संचालक को फायदा पहुंचाने के लिए न तो कोई जुर्माना लगाया और न ही खदान सील की। उल्टा, पर्यावरण विभाग के साथ मिलकर गुपचुप तरीके से फाइल आगे बढ़ा दी गई। अधिकारी मौका मुआयना करने भी पहुंचे, लेकिन किसी ने यह नहीं लिखा कि जिस खदान की अनुमति मांगी जा रही है, वह तो पहले ही पूरी खुदी पड़ी है।

अजीबोगरीब तर्क: गलती से खुद गई कृषि भूमि

कलेक्टर के कड़े रुख के बाद जब खनिज विभाग ने अपनी फाइलें खंगालीं, तो अफसरों ने खुद को बचाने के लिए एक नया और बहाना ढूंढ निकाला है। अधिकारियों का कहना है कि चूंकि मौके पर जमीन का सटीक सीमांकन नहीं हुआ था, इसलिए क्रेशर संचालक को अपनी खदान की बाउंड्री का पता नहीं चला और उसने अनजाने में दूसरी जगह (इन तीन सर्वे नंबरों पर) 250 फीट अवैध उत्खनन कर दिया। सवाल यह उठता है कि क्या 250 फीट गहरी खाई कोई अनजाने या गलती से एक-दो दिन में खोद सकता है? इसमें महीनों का समय लगा और भारी पोकलेन मशीनें चलीं, तब विभाग का अमला कहां था?

पौधारोपण की आड़ में कराई लोक सुनवाई

इस अवैध कृत्य पर पर्दा डालने के लिए 22 अप्रैल 2026 को बिलौआ गांव में बकायदा मुनादी कराई गई और पर्यावरण मंजूरी के लिए लोक सुनवाई आयोजित की गई। इस दौरान ग्रामीणों को खदान शुरू होने पर स्थानीय लोगों को रोजगार देने और खदान के चारों तरफ पौधारोपण (पेड़-पौधे लगाने) का लालच दिया गया। सुनवाई के दौरान कुल 09 सुझाव और आपत्तियां प्राप्त हुईं, जिन्हें फाइल में शामिल कर अनुमति की औपचारिकता पूरी की जा रही थी।

प्रदेश में राज्य सभा की तीन सीटों पर होने हैं चुनाव

घोषणा होते ही तेज हुई सरगर्मियां, भाजपा आश्वस्त, कांग्रेस के सामने सीट बचाने चुनौती

वरिष्ठ कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह ने दिए इस बार चुनाव न लड़ने के संकेत

ग्वालियर, दोपहर मेट्रो

मध्य प्रदेश की तीन राज्यसभा सीटों के लिए भारत निर्वाचन आयोग ने चुनाव कार्यक्रम घोषित कर दिया है। राज्यसभा चुनाव के लिए 1 जून 2026 से नामांकन प्रक्रिया शुरू होगी। 18 जून को मतदान और मतगणना एक साथ कराई जाएगी। चुनाव की घोषणा के बाद प्रदेश की राजनीति में हलचल तेज हो गई है और भाजपा-कांग्रेस दोनों ने रणनीति बनाना शुरू कर दिया है। जिन सीटों पर चुनाव होना है उनमें एक कांग्रेस के पास है। इस सीट को बचाए रखना कांग्रेस के लिए सियासी प्रतिष्ठा का मुद्दा बन गया है। दूसरी ओर भाजपा अपनी दो सीटों को लेकर काफी

आश्वस्त दिखाई दे रही है।

राजनीतिक समीकरणों के बीच एक बड़ा बदलाव यह भी सामने आया है कि वरिष्ठ कांग्रेसी और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने राज्यसभा चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया है। उनके पीछे हटने के बाद कांग्रेस में कई दावेदार सक्रिय हो गए हैं और पार्टी के भीतर चर्चाओं का दौर तेज हो गया है। कांग्रेस की तरफ से जिन नेताओं के नाम सामने आ रहे हैं उनमें पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, कमलेश्वर पटेल, अरुण यादव और पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा प्रमुख

भाजपा आदिवासी चेहरे पर लगा सकती है दांव

उधर भाजपा की ओर से मौजूदा सांसद डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी और जॉर्ज कुरियन का कार्यकाल पूरा हो रहा है। माना जा रहा है कि पार्टी जॉर्ज कुरियन को एक बार फिर मौका दे सकती है। वहीं दूसरी सीट पर किसी नए आदिवासी चेहरे को उतारने की संभावना भी जताई जा रही है। डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी भाजपा के मजबूत आदिवासी नेताओं में गिने जाते हैं और वर्तमान में प्रदेश महामंत्री की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। प्रदेश में लगभग 22 प्रतिशत आदिवासी आबादी को देखते हुए भाजपा इस वर्ग को साधने की रणनीति पर काम कर सकती है। हालांकि अंतिम फैसला पार्टी हाईकमान ही करेगा।

जल संरक्षण का आंदोलन बना गंगा दशहरा

धार में गंगा दशहरा पर्व पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत श्रमदान कर जल संरक्षण का संदेश दिया। जनभागीदारी, पर्यावरण संरक्षण और जल स्रोतों के संवर्धन के इस अभियान ने समाज को प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी निभाने की नई प्रेरणा दी। इस अवसर पर नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने भी श्रमदान किया।

राज्य और वन सेवा मुख्य परीक्षा में आवेदन की प्रक्रिया शुरू

इंदौर। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) ने राज्य सेवा और वन सेवा मुख्य परीक्षा के लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। अभ्यर्थी 15 जून तक आनलाइन आवेदन कर सकेंगे। इसके बाद उन्हें अतिरिक्त शुल्क देनी होगी। तीन हजार रुपये विलंब शुल्क के साथ 16 से 22 जून तक पंजीयन किए जाएंगे, जबकि 23 जून से 14 अगस्त तक आवेदन करने पर 25 हजार रुपये विलंब शुल्क देना होगा। अधिकारियों के मुताबिक मुख्य परीक्षा को लेकर तारीख तय कर दी, अगले कुछ दिनों में सिलेबस भी जारी कर दिया जाएगा।

जिलों में ज्वॉइनिंग शुरू, 25 हजार पद हैं खाली

मप्र पुलिस को अगले महीने मिलेंगे 6,500 नए आरक्षक

भोपाल। मध्य प्रदेश पुलिस को अगले माह तक लगभग 6500 नए आरक्षक मिल जाएंगे। आवंटित जिलों में इनकी ज्वॉइनिंग प्रारंभ हो गई है। इसके पहले चरित्र सत्यापन और मेडिकल परीक्षण भी कराया जा रहा है। चरित्र सत्यापन में देखा जा रहा है कि गंभीर धाराओं के अंतर्गत अभ्यर्थी के विरुद्ध अपराध पंजीबद्ध तो नहीं है। इसके साथ ही आधार नंबर से सत्यापन भी किया जा रहा है कि जो व्यक्ति लिखित और शारीरिक दक्षता परीक्षा में सम्मिलित हुआ था वही है या नहीं। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष 2025 में 2023 बैच के पुलिसकर्मियों के चरित्र सत्यापन के दौरान सामने आया कि उन्होंने साल्वरों को बैठाकर परीक्षा दिलाई थी।

एक लाख 16 हजार पदों में से 25 हजार रिक्त

बता दें कि मध्य प्रदेश पुलिस में आरक्षक से लेकर एएसपी स्तर के एक लाख 26 हजार पद हैं, जिनमें 25 हजार के करीब रिक्त हैं। इस कारण कानून-व्यवस्था से जुड़े कामों में सुरक्षा व प्रबंध को लेकर दिक्कत आती है। दूसरा यह कि तीन मुख्यमंत्रियों की घोषणा के बाद भी पुलिसकर्मियों में अवकाश नहीं मिल पा रहा है। पुलिस मुख्यालय के अधिकारियों ने बताया कि चयनित पुलिसकर्मियों को कई बार उससे अच्छी जगह नौकरी मिल जाती है, जिससे वे ज्वाइन नहीं करते हैं। इस कारण अभी कहा नहीं जा सकता है, सभी ज्वाइन करेंगे या नहीं।

मेट्रो एंकर

प्रदेश में ग्रामीण पर्यटन को लगेंगे पंख, पर्यटन बोर्ड करेगा विस्तार

1,000 नए गांवों में विस्तार पाएगी होम-स्टे योजना

भोपाल, दोपहर मेट्रो

घरेलू और विदेशी पर्यटकों को गांव के पारंपरिक रहन-सहन, स्थानीय खान-पान और संस्कृति का अनुभव कराने तथा इसके माध्यम से ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से शुरू की गई होम स्टे की योजना मप्र में काफी लोकप्रिय हो रही है। अब मध्यप्रदेश में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए होम-स्टे योजना का विस्तार किया जा रहा है। इसके लिए धरती आबा परियोजना शुरू की जा रही है। इसके तहत राज्य के एक हजार नए गांवों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है और इसके लिए पर्यटन बोर्ड द्वारा सर्वे शुरू कर दिया गया है।

दरअसल, प्रदेश में पर्यटन बोर्ड ने धरती आबा परियोजना के अंतर्गत 14 जनजातीय गांवों के नाम तय कर लिए गए हैं। इनमें अनूपपुर जिले के आठ, डिंडौरी के चार, मंडला के दो गांव शामिल हैं। इन क्षेत्रों में होम-स्टे निर्माण के लिए ट्राइबल फंड से सब्सिडी भी दी जाएगी। इसके लिए प्रोजेक्ट को स्वीकृति मिल गई है। इसके अंतर्गत ऑपरेशनल होम स्टे 360 हैं। धरती आबा प्रोजेक्ट के तहत 86 बनाए जाएंगे।

होम स्टे बनाने के लिए सरकार द्वारा 40 फीसदी अनुदान (नया निर्माण करने पर अधिकतम दो रुपये लाख तक) दिया जाता है।इसके लिए किसी होटल के लाइसेंस या कमर्शियल बिजली कनेक्शन की आवश्यकता नहीं होती। होम-स्टे से होने वाली 20 लाख रुपये तक की आय जीएसटी मुक्त होती है। मप्र पर्यटन बोर्ड के डायरेक्टर स्किल डीपी सिंह के अनुसार वर्तमान में मप्र में 77 गांवों में 447 रजिस्टर्ड होम-स्टे हैं, जिनमें से 360 पूरी तरह संचालित मोड में हैं। इस पहल का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। इसके चलते ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत होते देखा जा रहा है। अब तक इन होम-स्टे के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में सीधे तौर पर 67.6 करोड़ रुपये की आय हुई है। होम-स्टे वाले 65 गांवों में सोलर और एलईडी लाइटें लगाई गईं हैं। इससे रात का समय भी पर्यटकों के लिए गांवों में सुरक्षित और सुलभ हो गया है। अगले एक साल सभी होम-स्टे वाले गांवों में सोलर लाइट लगाए जाने की योजना है।

सैलानियों को भा रहा कोदो-कुटकी और चूल्हे का स्वाद

प्रदेश में संचालित होम-स्टे में पहुंचने वाले पर्यटकों को शुद्ध ग्रामीण परिवेश का अनुभव मिल रहा है। विदेशी और शहरी सैलानी यहां विशेष रूप से मिट्टी के चूल्हे पर बनी रोटियां और मध्य प्रदेश के पारंपरिक मोटे अनाज जैसे कोदो-कुटकी से बने व्यंजनों का लुत्फ उठा रहे हैं। स्थानीय कला, शिल्प और परंपराओं को करीब से देखने का यह अनुभव इस योजना की सफलता का मुख्य आधार बना हुआ है। वर्तमान में मप्र में 77 गांवों में 307 होम-स्टे संचालित हैं। इस पहल का सीधा और सकारात्मक असर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर देखा जा रहा है। इसी को देखते हुए धरती आबा प्रोजेक्ट की शुरुआत की जा रही है।- डीपी सिंह, डायरेक्टर स्किल, मप्र पर्यटन बोर्ड।

बदलाव का हैशटैग

लोकतंत्र में कभी नारे सड़कों पर जन्म लेते थे, फिर वे अखबारों की सुर्खियां बनते थे और अंततः सत्ता के गलियारों तक पहुंचते थे। लेकिन डिजिटल युग ने इस यात्रा को बदल दिया है। अब एक मोबाइल स्क्रीन पर शुरू हुआ विचार कुछ ही दिनों में करोड़ों लोगों तक पहुंच सकता है, राजनीतिक दलों को प्रतिक्रिया देने पर मजबूर कर सकता है और राष्ट्रीय विमर्श का विषय बन सकता है। सोशल मीडिया पर उभरी 'कॉकरोच जनता पार्टी' की चर्चा इसी नए दौर की कहानी कहती है। पहली नजर में यह एक व्यंग्यात्मक अभियान या आनलाइन ट्रेंड प्रतीत हो सकता है, लेकिन इसके पीछे छिपे संदेश को समझना अधिक महत्वपूर्ण है। जब किसी प्रतीक, मीम या सोशल मीडिया पेज के साथ लाखों युवा जुड़ने लगें, तो यह केवल मनोरंजन नहीं होता। यह उस मानसिक स्थिति का संकेत भी हो सकता है, जिसमें एक बड़ा वर्ग स्वयं को अनसुना और उपेक्षित महसूस कर रहा हो। बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं, अवसरों की कमी और व्यवस्था के प्रति बढ़ती निराशा जैसी भावनाएं अक्सर ऐसे ही प्रतीकों के माध्यम से अभिव्यक्ति का रास्ता खोज लेती हैं। सत्ता पक्ष के नेताओं से लेकर विपक्षी दलों तक, सभी ने इस पर अपनी-अपनी व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। किसी ने इसे बाहरी प्रभावों से जोड़ने का प्रयास किया, तो किसी ने इसे युवाओं के असंतोष की स्वाभाविक अभिव्यक्ति बताया। लेकिन इन सभी प्रतिक्रियाओं के बीच एक प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण बनकर उभरता है-क्या हम संदेश को सुन रहे हैं या केवल संदेशवाहक पर बहस कर रहे हैं? दरअसल, किसी भी लोकतंत्र में असंतोष अपने आप में समस्या नहीं होता। समस्या तब पैदा होती है जब असंतोष को सुनने की क्षमता कमजोर पड़ने लगती है। इतिहास गवाह है कि समाज में बड़े परिवर्तन अक्सर उन्हीं आवाजों से शुरू हुए हैं जिन्हें शुरूआत में हल्के में लिया गया था। आज का युवा केवल रोजगार नहीं चाहता, वह सम्मानजनक अवसर, पारदर्शिता और अपनी आकांक्षाओं की स्वीकार्यता भी चाहता है। सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, लेकिन यह भ्रम, प्रचार और भावनात्मक उन्माद का मंच भी बन सकता है। इसलिए किसी भी आनलाइन अभियान का मूल्यांकन तथ्यों और विवेक के आधार पर होना चाहिए, न कि केवल लोकप्रियता के आंकड़ों पर।

पर्यावरण का पुनर्जागरण, जीवन के प्रति बदलती सोच और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता का प्रतीक

डॉ. सत्यवान सौरभ
स्तंभकार

एक समय था जब भारतीय घरों, आंगनों, चौपालों और खेतों में लकड़ी की खाट या चारपाई जीवन का अभिन्न हिस्सा हुआ करती थी। सुबह की चाय से लेकर रात की नींद तक, खाट केवल एक फर्नीचर नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक जीवन का केंद्र थी। जैसे-जैसे आधुनिकता का प्रभाव बढ़ा, शहरीकरण ने गति पकड़ी और बाजार में नए-नए प्रकार के बेड, सोफा-कम-बेड तथा महंगे गद्दे आने लगे। खाट धीरे-धीरे घरों से गायब होने लगी। इसे पुरातन, ग्रामीण और पिछड़ेपन का प्रतीक मान लिया गया। परंतु समय का चक्र एक बार फिर घूम रहा है। आज लोग दोबारा लकड़ी की खाट की ओर लौट रहे हैं। यह वापसी केवल एक पारंपरिक वस्तु की वापसी नहीं है, बल्कि जीवन के प्रति बदलती सोच, स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता और प्रकृति के साथ संतुलन की तलाश का प्रतीक भी है।

भारतीय समाज में खाट का इतिहास बहुत पुराना है। इसे चारपाई, मंजी या खटिया जैसे नामों से भी जाना जाता है। लकड़ी के मजबूत ढांचे और रस्सियों या पट्टियों से बुनी हुई यह संरचना सदियों तक भारतीय जीवन का आधार रही। गांवों में चौपाल की पहचान खाटों से होती थी। परिवार के बुजुर्ग खाट पर बैठकर निर्णय लेते थे। किसान दिनभर के श्रम के बाद खाट पर विश्राम करते थे और बच्चे उसी पर खेलते-कूदते बड़े होते थे। यह केवल आराम का साधन नहीं थी, बल्कि सामाजिक संवाद का मंच भी थी। आज भी ग्रामीण भारत में खाट पर बैठकर होने वाली चर्चाएं लोकतांत्रिक संवाद की सबसे सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति मानी जाती हैं।

पिछले कुछ दशकों में जीवनशैली में बड़े बदलाव आए। लोगों ने आधुनिक फर्नीचर को प्रगति और समृद्धि का प्रतीक मान लिया। बड़े-बड़े बेड, मोटे गद्दे और आकर्षक डिजाइन वाले फर्नीचर घरों की आवश्यकता बन गए। विज्ञापनों ने भी लोगों को यह विश्वास दिलाया कि आराम केवल महंगे गद्दों और आधुनिक बिस्तरों में ही संभव है। परिणामस्वरूप खाट धीरे-धीरे घरों से बाहर होती चली गई। अब जब लोग स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, बढ़ते तनाव और कृत्रिम जीवनशैली के दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं, तब वे उन पारंपरिक विकल्पों को नए दृष्टिकोण से देखने लगे हैं जिन्हें कभी उन्होंने स्वयं ही त्याग दिया था। लकड़ी की खाट की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण स्वास्थ्य संबंधी लाभ हैं। आधुनिक जीवनशैली में कमर दर्द, गर्दन दर्द और रीढ़ से जुड़ी समस्याएं तेजी से बढ़ी हैं। बहुत अधिक मुलायम गद्दों पर सोना कई लोगों के लिए असुविधाजनक साबित हुआ है। इसके विपरीत खाट का ढांचा शरीर को संतुलित सहारा देता है। रस्सियों से बुनी खाट शरीर के भार को समान रूप से वितरित करती है, जिससे रीढ़ पर अनावश्यक दबाव कम पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अनेक बुजुर्ग वर्षों तक खाट पर सोने के कारण बेहतर शारीरिक स्थिति में दिखाई देते हैं। यद्यपि हर व्यक्ति की स्वास्थ्य आवश्यकताएं अलग होती हैं, फिर भी खाट को प्राकृतिक और संतुलित विश्राम का साधन माना जाता है। गर्म जलवायु वाले हमारे देश में खाट की उपयोगिता और भी अधिक है। फोम और स्प्रिंग वाले गद्दे अकसर शरीर की गर्मी को रोक लेते हैं, जिससे गर्मियों में असुविधा बढ़ जाती है। इसके विपरीत खाट के नीचे और ऊपर दोनों ओर से हवा का प्रवाह बना रहता है। यह प्राकृतिक वेंटिलेशन शरीर को ठंडक प्रदान करता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है। बिजली की बढ़ती खपत और एयर कंडीशनर पर निर्भरता के इस दौर में खाट का यह गुण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भी खाट का महत्व बढ़ रहा है। आज दुनिया टिकाऊ विकास और पर्यावरण संरक्षण की बात कर रही है। आधुनिक फर्नीचर उद्योग में प्लास्टिक, सिंथेटिक फोम और रासायनिक पदार्थों का व्यापक उपयोग होता है, जिनका पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत लकड़ी और प्राकृतिक रस्सियों से बनी खाट अपेक्षाकृत पर्यावरण-अनुकूल होती है। यह लंबे समय तक चलती है। आसानी से मरम्मत की जा सकती है और इसके अधिकांश हिस्से पुनर्चक्रित या प्राकृतिक रूप से नष्ट हो सकते हैं। ऐसे समय में जब लोग पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील हो रहे हैं, खाट उन्हें एक टिकाऊ विकल्प के रूप में दिखाई देने लगी है। खाट की वापसी का एक कारण आर्थिक भी है। महंगे फर्नीचर और ब्रांडेड गद्दों की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं। दूसरी ओर, स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाई गई खाट अपेक्षाकृत सस्ती और टिकाऊ होती है। ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में आज भी खाट कम लागत में उपलब्ध है। यह वर्षों तक उपयोग में आ सकती है और आवश्यकता पड़ने पर उसकी रस्सियां बदलकर उसे फिर नया बनाया जा सकता है। इस प्रकार खाट केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी व्यवहारिक विकल्प है।

दिलचस्प बात यह है कि खाट की वापसी केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं है। बड़े शहरों में भी लोग इसे नए रूप में अपना रहे हैं। इंटीरियर डिजाइनरों ने पारंपरिक खाट को आधुनिक सौंदर्यबोध के साथ प्रस्तुत करना शुरू किया है। आज कई घरों में खाट को बालकनी, गार्डन, टैरेस या लिविंग स्पेस में सजावटी और उपयोगी वस्तु के रूप में रखा जा रहा है। रिसॉर्ट, कैफे और होमस्टे भी अपने परिसर में खाट का उपयोग कर रहे हैं, ताकि ग्राहकों को देसी और पारंपरिक अनुभव मिल सके। यह दिखाता है कि परंपरा और आधुनिकता का मेल किस प्रकार संभव है।

संभव है कि आने वाले वर्षों में खाट फिर कभी हर घर का मुख्य फर्नीचर न बने, लेकिन उसका पुनर्जागरण यह अवश्य सिद्ध करता है कि परंपरा कभी पूरी तरह समाप्त नहीं होती। जब आधुनिक जीवन की चुनौतियां बढ़ती हैं, तब समाज अकसर अपनी जड़ों में समाधान खोजता है। लकड़ी की खाट की वापसी इसी खोज की कहानी है–एक ऐसी कहानी जिसमें स्वास्थ्य है, पर्यावरण है, संस्कृति है और जीवन को अधिक मानवीय बनाने की आकांक्षा भी।

यही कारण है कि आज लोग दोबारा लकड़ी की खाट पर लौट रहे हैं। वे केवल एक पुराने फर्नीचर को नहीं अपना रहे, बल्कि एक ऐसे जीवन-दर्शन को पुनर्जीवित कर रहे हैं जो सादगी, संतुलन, आत्मीयता और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित है। यही इस वापसी का सबसे बड़ा अर्थ और सबसे बड़ी उपलब्धि है।

–यह लेखक के अपने विचार हैं।

तपती धरती, आग उगलता आसमान जागरूकता और बचाव ही जीवन रक्षक

मनोज कुमार अग्रवाल
स्तंभकार

देश तप रहा है। उत्तर प्रदेश के बांदा और महाराष्ट्र के वर्धा दोनों ही शहरों में भीषण गर्मी का रिकार्ड बनाया है। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार, बांदा में अधिकतम तापमान 48.2°C तक दर्ज किया गया, जो देश में सबसे अधिक है, जबकि वर्धा में भी पारा 47.1°C के उच्च स्तर पर पहुंच गया है।हाल ही में बांदा में तापमान 48°C के पार पहुंच गया, जिससे यह क्षेत्र भारत और एशिया के सबसे गर्म स्थानों में शामिल हो गया है।वर्धा (महाराष्ट्र) विदर्भ क्षेत्र में स्थित वर्धा शहर भी इस भीषण लू की चपेट में है, जहां तापमान 47.1एष्ट तक पहुंच गया है इससे पहले राजनांदगांव काा तापमान रिकार्ड बना चुका है लगता है देर-सवेर देश के सभी शहर कस्बे ऐसा ही रिकार्ड बनाएंगे मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, रेगिस्तानी और पश्चिमोत्तर इलाकों से आ रही गर्म हवाओं (लू) और आसमान साफ होने के कारण धूप की प्रचंडता से इन क्षेत्रों में तापमान लगातार बढ़ रहा है। देश इस समय ऐसी भीषण गर्मी से गुजर रहा है, जिसने सामान्य जनजीवन को हिला दिया है। जब दुनिया के 50 सबसे गर्म शहरों की सूची में सभी शहर भारत के ही दर्ज हों, तो यह केवल चौंकाने वाली खबर नहीं, बल्कि गंभीर चिंता का विषय है। ओडिशा के बलांगीर में 45 डिग्री सेल्सियस तापमान, महाराष्ट्र राष्ट्र के चंद्रपुर और उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 44 डिग्री सेल्सियस, तथा उत्तर भारत और मध्य भारत के कई शहरों में 42 से 43 डिग्री सेल्सियस तापमान यह बताने के लिए काफी है कि गर्मी अय सामान्य मौसमी बदलाव से आगे बढ़कर जनजीवन के लिए खतरा बन चुकी है। अगर देखा जाए, यह केवल मौसम की सामान्य मार नहीं है, बल्कि एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट का संकेत है। जब किसी देश के कई शहर दुनिया के सबसे गर्म स्थानों की सूची में शामिल हो जाएं, तब यह समझना जरूरी हो जाता है कि समस्या केवल तापमान की नहीं, बल्कि तैयारी, जागरूकता और व्यवस्था की भी है। भारत में गर्मी कोई नई बात नहीं है। हर साल अप्रैल, मई और जून में लू चलती है, खेत सूखते हैं, सड़कें तपती हैं और लोग छांव की तलाश करते हैं। लेकिन इस बार गर्मी का स्वरूप ज्यादा तीखा, व्यापक और खतरनाक दिखाई दे रहा है। उत्तर भारत, मध्य भारत, पश्चिम भारत और पूर्वी भारत के कई हिस्सों में तापमान लगातार ऊंचा बना हुआ है। उत्तर प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा और तेलंगाना जैसे राज्यों में भीषण गर्मी ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। गर्मी और लू को लंबे समय तक केवल मौसम की परेशानी समझा जाता रहा है, लेकिन आज यह सोच बदलने की जरूरत है। लू शरीर पर सीधा हमला करती रती है। है। चकर आना, कमजोरी, तेज प्यास, घबराहट, सिरदर्द, पेट दर्द, बेहोशी और शरीर का तापमान बढ़ना इसके शुरुआती संकेत हो सकते हैं। यदि समय पर ध्यान न दिया जाए तो यही स्थिति हीट स्ट्रोक में बदल सकती है, जो जानलेवा साबित हो सकत्ती है। सबसे अधिक खतरा बच्चों, बुजुगों, गर्भवती महिलाओं, पहले से बीमार लोगों, मजदूरों, किसानों, रिक्शा चालकों, निर्माण कार्य से जुड़े श्रमिकों और सड़क पर काम करने वाले कर्मचारियों को होता है। ये लोग अक्सर मजबूरी में तपती धूप में काम करते हैं। इनके पास न तो पर्याप्त छांव होती है, न ठंडा पानी और न आराम की सुविधा। ऐसे में केवल सलाह देना पर्याप्त नहीं है, इनके लिए स्थानीय स्तर पर ठोस व्यवस्था भी जरूरी है। केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से से एडवाइ एडवाइजरी जारी की जा रही है। अस्पतालों में हीटस्ट्रोक कक्ष, ओआरएस, इलेक्ट्रोलाइट्स, आइस पैक, ठंडे तरल पदार्थ और प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की व्यवस्था की जा रही है। यह स्वागत योग्य कदम है। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये तैयारियां केवल कागजों तक सीमित रहेंगी या जमीन पर भी दिखाई देंगी? हर जिला अस्पताल, उप-जिला अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में गर्मी से जुड़ी बीमारियों के इलाज की स्पष्ट व्यवस्था होनी चाहिए। एंबुलेंस कर्मियों को भी हीट स्ट्रोक की स्थिति में तत्काल राहत राहत देने का प्रशिक्षण मिलना चाहिए। स्थानीय प्रशासन को वाजारों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, श्रमिक क्षेत्रों, निर्माण स्थलों और भीड़भाड़ वाले स्थानों पर पेयजल की व्यवस्था करनी चाहिए। सार्वजनिक स्थानों पर अस्थायी छांव, पानी के टैंकर और प्राथमिक उपचार केंद्र बनाए जा सकते हैं। स्कूलों, खेल आयोजनों और सामूहिक कार्यक्रमों के समय में बदलाव जरूरी है।

गर्मी से बचाव के उपाय कठिन नहीं हैं, लेकिन उन्हें गंभीरता से अपनाना जरूरी है। लोगों को बार-बार पानी पीना चाहिए, भले ही प्यास न लगी हो। हल्के रंग के ढीले सूती कपड़े पहनने चाहिए। सिर को कपड़े, टोपी या छाते से ढकना चाहिए। खाली पेट धूप में बाहर नहीं निकलना चाहिए। शराब, बहुत अधिक चाय-कॉफी और अत्यधिक तले-भुने भोजन से बचना चाहिए। घर से बाहर निकलते समय पानी की बोतल जरूर रखनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को चकर आए, तेज कमजोरी महसूस हो, शरीर गर्म हो जाए या बेहोशी जैसी स्थिति दिखे तो उसे तुरंत छांच या ठंडी जगह पर ले जाना चाहिए। कपड़ों को डीला करना चाहिए, शरीर पर ठंडा पानी डालना चाहिए और तुरंत चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए। भीषण गर्मी अब केवल असुविधा नहीं, जीवन और मृत्यु का प्रश्न बनती जा रही है। सरकार, प्रशासन, समाज और नागरिक सभी को अपनी भूमिका निभानी होगी। मौसम विभाग की चेतावनी को हल्के में लेना खतरनाक हो सकता है। हर परिवार को अपने चच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। हर मोहल्ले, पंचायत और वार्ड स्तर पर जागरूकता अभियान चलना चाहिए। गर्मी की यह मार हमें एक बड़ा संदेश दे रही है। प्रकृति के साथ खिलवाड़, शहरों का अनियोजित विस्तार और पर्यावरण की उपेक्षा अब सीधे हमारे स्वास्थ्य पर असर डाल रही है। आज जरूरत है कि हम केवल गर्मी से बचने की तैयारी न करें, बल्कि भविष्य को ठंडा और सुरक्षित बनाने की दिशा में भी गंभीर कदम उठाएं, क्योंकि यदि आज हमने चेतावनी नहीं समझी, तो आने वाला समय और भी अधिक तपिश लेकर आएगा।इसलिए सिर्फ जागरूकता और बचाव ही जीवन रक्षक हैं।

–यह लेखक के अपने विचार हैं।

हेल्थ अलर्ट

बीमारियों की दवा ले रहे हैं तो नौतपा की गर्मी में खास ध्यान रखने की जरूरत

हर साल की तरह इस साल भी गर्मी आते ही लोगों को तेज धूप के कारण कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ज्योतिष के अनुसार सूर्य की स्थिति के आधार पर इस वर्ष मई के अंतिम सप्ताह में नौतपा लग रहा है। इस दौरान अधिक गर्मी के कारण लोगों के शरीर में पानी की कमी से कई तरह की समस्याएं सामने आने लगती हैं। यही वजह है कि इस मौसम में डॉक्टर्स द्वारा लोगों को सेहत की अनदेखी न करने की सलाह दी जाती है।पहले से बीमार चल रहे लोगों के लक्षण गंभीर होने की संभावना बढ़ जाती है। डॉक्टर्स के अनुसार इस दौरान हीट स्ट्रेस की वजह से शरीर का नैचुरल बैलेंस सिस्टम प्रभावित होता है। इसकी वजह से डायबिटीज, किडनी के मरीज, हार्ट के मरीज, बीपी, बुजुर्गों और प्रेग्नेंट महिलाओं की सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन जनरल के अनुसार हार्ट के मरीजों को तेज गर्मी में सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। तापमान बढ़ने पर शरीर का थर्मोरेगुलेटरी सिस्टम गर्मी को नियंत्रित करने का काम करता है। लेकिन, अधिक गर्मी होने के कारण हीट स्ट्रोक या हीट एग्जॉशन की संभावना बढ़ जाती है।

अस्थमा व सांस संबंधी रोगी: रिसर्च बताती है कि गर्म मौसम में बार-बार या कुछ समय के लिए गर्म वातावरण में रहने से व्यक्ति के फेफड़ों के कार्य पर दबाव पड़ता है। खासकर, अस्थमा के रोगियों के लिए तेज गर्म मौसम उनके लक्षणों के बढ़ने का कारण बन सकता है। एनसीबीआई की रिपोर्ट के मुताबिक गर्म तापमान में अधिक वजन के लोगों को गर्मी से जुड़े रोग होने की संभावना अधिक होती है। कई मामलों में यह देखा गया है कि जिन लोगों का वजन अधिक होता है उनको कम वजन के लोगों की तुलना में हीट स्ट्रोक होने की संभावना अधिक होती है।

नौतपा से बचने के लिए जरूरी है कि डिहाइड्रेशन की समस्या से बचें। थोड़ी-थोड़ी देर में पानी पीते रहें। दोपहर के समय बाहर जाने से बचें।

दोपहर के समय बाहर जाना जरूरी हो तो ऐसे में शरीर को कपड़े से कवर करें। कॉटन के ढीले कपड़े पहनें, ताकि पसीना आसानी से सूख सके। ज्यादातर तला भुना या मसालेदार खाना न खाएं, इससे शरीर में गर्मी बढ़ सकती है।हीट स्ट्रोक, चक्कर, सिर में दर्द या थकान होने पर कहीं छांव वाली जगह पर कुछ समय के लिए आराम करें। सही लाइफस्टाइल और बचाव उपायों को अपनाकर आप किसी भी मौसम में सेहत को होने वाले नुकसानों से बचाव कर सकते हैं।

सुविचार

सादगी में सुंदरता है, और
विनम्रता में महानता।
–अज्ञात

निशाना

लोग मरते हैं..!

धर्मराज देशराज

मौत अपनी न ज़िन्दगी अपनी
हाय, कमबख़्त बेबसी अपनी।
भूल जाए भले जहां हमको
बस रहे याद सादगी अपनी।
लोग मरते हैं लालो- गौहर पर
मुझको जीना है ज़िन्दगी अपनी।
इश्क़ अपने ख़ुदा से यूँ कर लें
हर जुबां पर हो आशिक़ी अपनी।
चाहते हैं भले ही मर जाएँ
पर रहे जग में शायरी अपनी।
कांच जैसी ख़ुशी में क्यूँ दे दूँ
ग़म की दौलत है कीमती अपनी।
ग़र अचानक 'धरम' चला जाऊँ
लोग समझेंगे दिल्लगी अपनी।

नेचर वॉच

सालों तक पार्टनर की तलाश करते हैं सांप, दूसरी प्रजाति से नहीं करते मिलन!

इंसानों में तो सिंगल रहने की स्थितियांआम है, लेकिन प्रकृति के कुछ जीव ऐसे भी हैं जो इंतजार की मिसाल पेश करते हैं। सांपों की बात करें तो कई प्रजातियां 8 से 10 साल या उससे भी ज्यादा समय तक अपने सही साथी का इंतजार करती है। अगर सही पार्टनर नहीं मिला तो वे जबरदस्ती या किसी और प्रजाति के साथ मिलन नहीं करते। यह उनकी वफादारी का अनोखा उदाहरण है। सांपों का प्रजनन व्यवहार बेहद जटिल और रोचक है। ज्यादातर सांप प्रजातियां मौसम के अनुसार मेटिंग करती हैं। मादा सांप फेरोमोन छोड़कर नर को आकर्षित करती है। लेकिन नर को मादा को आकर्षित करने के लिए कई बार लंबा संघर्ष करना पड़ता है. कुछ प्रजातियों में नर सांप मादा के लिए लड़ते भी हैं। फिर भी अगर मादा को नर पसंद नहीं आया तो वह मना कर देती है।

सिंगल रहने में एक्सपर्ट: वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार कुछ सांप जैसे रैटल स्नेक, पाइथन और कुछ कोबरा प्रजातियां लंबे समय तक सिंगल रह सकती हैं। खासकर दुर्गम जंगलों और द्वीपों पर रहने वाले सांपों में यह व्यवहार ज्यादा देखा जाता है। जहां जनसंख्या कम है, वहां सही साथी मिलने में कई साल लग जाते हैं। एक अध्ययन में पाया गया कि कुछ नर सांप 10 साल तक मादा की तलाश में भटकते रहते हैं। इस दौरान वे खाना कम खाते हैं और सिर्फ प्रजनन पर फोकस करते हैं। अगर सही मादा नहीं मिली तो वे मरने तक इंतजार करते हैं। दूसरी प्रजाति के साथ मिलन करने की बजाय वे अकेले जीवन बिताना पसंद करते हैं। अगर सांप दूसरी प्रजाति से मिलन करें तो संतान कमजोर या अनुपयोगी हो सकती है।

नहीं करते दूसरी प्रजाति से मिलन: प्रकृति ने उन्हें यह सहज बुद्धि दी है कि सही साथी का चुनाव बेहद महत्वपूर्ण है। भारत में पाए जाने वाले कई सांप जैसे रॉयल स्नेक, कोबरा और वाइपर भी इसी व्यवहार को दिखाते हैं। मानसून के मौसम में इनका मेटिंग पीरियड होता है। इस समय सांप ज्यादा सक्रिय दिखते हैं। लेकिन फिर भी हर नर-मादा का जोड़ा नहीं बन पाता। कई बार इंतजार करते-करते वे शिकारियों का शिकार हो जाते हैं या सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं। इस वजह से कई प्रजातियां लुप्तप्राय हो रही हैं। वन्यजीव एक्सपर्ट्स के मुताबिक़, सांपों में मेटिंग सीजन बेहद खास होता है। वे रासायनिक संकेतों (फेरोमोन) के आधार पर साथी चुनते हैं।

टेक्नो अपडेट

बीएसएनएल और स्टारलिंक मिलाएंगे हाथ दूरदराज के इलाकों में मिलेगी कनेक्टिविटी

अब दूर-दराज के इलाकों में खराब इंटरनेट की परेशानी दूर होने वाली है। दरअसल BSNL और दुनिया के सबसे अमीर इंसान एलन मस्क की कंपनी स्टारलिंक के बीच बड़ी और रणनीतिक साझेदारी को लेकर चर्चा चल रही है। इस डील के पीछे का मकसद देश के उन सुदूर इलाकों, पहाड़ों और जंगलों में हाई-स्पीड इंटरनेट और 4G/5G नेटवर्क पहुंचाना है, जहां आज भी मोबाइल सिग्नल नहीं पहुंच पाया है।

अगर आप भी गांव या किसी दूरदराज के इलाके में रहते हैं और खराब इंटरनेट से परेशान हैं, तो आपके लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी है। भारत की सरकारी टेलीकॉम कंपनी BSNL और दुनिया के सबसे अमीर इंसान एलन मस्क की कंपनी 'स्टारलिंक' (Starlink) के बीच एक बेहद बड़ी और रणनीतिक साझेदारी को लेकर बातचीत शुरू हो गई है। इस महा-डील का मुख्य मकसद देश के उन सुदूर इलाकों, पहाड़ों और जंगलों में हाई-स्पीड इंटरनेट और 4G/5G नेटवर्क पहुंचाना है, जहां आज भी मोबाइल सिग्नल मिलना एक बड़ा सपना है। रिपोर्ट्स के मुताबिक BSNL और स्टारलिंक के बीच सैटेलाइट बैकहॉल को लेकर शुरुआती चर्चा हुई है। पूर्वोत्तर भारत हिमालयी क्षेत्रों और दूरदराज के द्वीपों जैसे मुश्किल इलाकों में जमीन के नीचे फाइबर केबल बिछाना मुश्किल और महंगा काम है, जिसमें सालों लग सकते हैं। वहीं BSNL चाहता है कि इन दुर्गम इलाकों में मौजूद मोबाइल टावरों को स्टारलिंक की सैटेलाइट्स के जरिए सीधे अंतरिक्ष से कनेक्ट कर दिया जाए। इससे बिना कोई केबल बिछाए कुछ ही हफ्तों में देश के सबसे पिछड़े इलाकों में बी सुपरफास्ट इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराया जा सकेगा।

भारत में कदम जमाने के लिए फिलहाल स्टारलिंक को सुरक्षा मंजूरी की जरूरत है। ऐसे में रिपोर्ट्स के अनुसार अगर स्टारलिंक प्राइवेट कंपनी की जगह किसी सरकारी कंपनी के साथ मिलकर काम करती है, तो उसके लिए भारतीय सुरक्षा और सरकारी नियमों का पालन कर पाना ज्यादा आसान होगा। रिपोर्ट्स बताती हैं कि फिलहाल स्टारलिंक के पास भारत में कोई रिटेल या डिस्ट्रीब्यूटर नेटवर्क भी नहीं है। BSNL के साथ हाथ मिलाकर एलन मस्क की कंपनी देश के कोने-कोने में फैले BSNL के नेटवर्क और भरोसेमंद डिस्ट्रीब्यूटर्स का फायदा उठाकर अपनी सर्विसेज तेजी से लॉन्च कर सकेगी।

सरकारी कंपनियों को भी फायदा: अगर यह डील आकार लेती है तो डिजिटल इंडिया मिशन को जबरदस्त फायदा मिलेगा। मार्च 2026 के आंकड़ों के अनुसार भारत के गांवों में टेलीफोन सर्विसेज तक पहुंच सिर्फ 60.02% है। सरकार इसे 100% करना चाहती है। इसके लिए 30 हजार गांवों की पहचान की गई है।

क्म्हरुस्टारलिंक की मदद से उन बड़े विभागों बैंकों और पब्लिक सेक्टर कंपनियों को भी बेहतर इंटरनेट उपलब्ध करवा सकेगी जो बेहद रिमोट लोकेशंस पर काम करती हैं। इसके अलावा किसी आपदा में बी सैटेलाइट नेटवर्क पूरी तरह से सुरक्षित और चालू रहता है।

न्यूज विंडो

तम्बाकू निषेध सप्ताह की शुरुआत तम्बाकू त्यागने की दिलाई शपथ

गंजबासौदा। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र त्योंदा में रविवार को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस एवं विश्व तम्बाकू निषेध सप्ताह के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को तम्बाकू सेवन से होने वाली गंभीर बीमारियों और उसके दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रमेन्द्र तिवारी ने उपस्थित स्वास्थ्य कर्मियों एवं नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि तम्बाकू सेवन कैंसर, हृदय रोग, फेफड़ों की बीमारी और कई घातक रोगों का प्रमुख कारण है। उन्होंने कहा कि तम्बाकू न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि परिवार और समाज पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। इस अवसर पर सभी उपस्थित लोगों को तम्बाकू सेवन न करने की शपथ दिलाई गई। साथ ही यह संकल्प भी कराया गया कि वे अपने परिचितों, पड़ोसियों और जनसमुदाय को तंबाकू सेवन से होने वाले खतरनाक दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करेंगे और उन्हें नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करेंगे। डॉ. तिवारी ने कहा कि विश्व तम्बाकू निषेध सप्ताह का उद्देश्य समाज में जनजागरूकता बढ़ाना और युवाओं को नशे की गिरफ्त में आने से बचाना है। उन्होंने सभी से अपील की कि स्वस्थ जीवन और बेहतर भविष्य के लिए तंबाकू से पूरी तरह दूरी बनाएं। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, कर्मचारी एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

गौवंश रक्षा को लेकर विहिप ने राज्यपाल के नाम सौंपा ज्ञापन

गंजबासौदा। विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग द्वारा गौवंश हत्या और गौ तस्करी की घटनाओं पर रोक लगाने की मांग को लेकर राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में प्रशासन से कठोर कार्रवाई करते हुए संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष निगरानी रखने और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने की मांग की गई। ज्ञापन में कहा गया कि गौवंश भारतीय संस्कृति, आस्था और आर्थिक समृद्धि का प्रमुख आधार है। गौवंश को सकारात्मक ऊर्जा और स्वास्थ्य का स्रोत बताते हुए परिषद ने कहा कि देश में लगातार बढ़ रही गौ तस्करी और हत्या की घटनाएं समाज में चिंता का विषय बनी हुई हैं। विहिप गोरक्षा विभाग ने आरोप लगाया कि कठोर कानून होने के बावजूद कई स्थानों पर पुलिस-प्रशासन की लापरवाही और नरम रवैये के कारण गौ तस्कर सक्रिय हैं। ऐसे में गौ रक्षकों को कई बार अपने प्राणों की परवाह किए बिना सड़कों पर उतरना पड़ता है, जो बेहद चिंताजनक स्थिति है। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि बीते वर्षों में गौवंश से जुड़ी घटनाओं में वृद्धि देखने को मिली है। परिषद ने मुस्लिम समाज के विद्वानों, धर्मगुरुओं और वरिष्ठ लोगों से भी समाज में जागरूकता फैलाने और शांति बनाए रखने की अपील की।

परिवहन मंत्री ने गंगा दशहरा पर सेठानी घाट पर नर्मदा महाआरती में लिया हिस्सा

नर्मदापुरम। प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह ने सोमवार को गंगा दशहरा के पावन अवसर पर सेठानी घाट पर पहुंचकर नित्य होने वाली माँ नर्मदा की महाआरती में शामिल होकर माँ नर्मदा अष्टक का पाठ किया। उन्होंने माँ की पूजा-अर्चना कर पुष्प अर्पित किए और चुनरी चढ़ाई। मंत्री सिंह ने बाद में विवेकानंद घाट पर श्रमदान कर घाट की सफाई में हाथ बटाया। स्वयं झाड़ू लेकर सफाई करते हुए उन्होंने पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने पौधारोपण भी किया और नागरिकों से अपने आसपास के परिसर, घर तथा घाटों को प्रतिदिन साफ रखने की अपील की। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद माया नारोलिया, पिपरिया विधायक ठाकुरदास नागवंशी, नगर पालिका नर्मदापुरम की अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव के साथ अनेक जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष प्रीती पवन शुक्ला, पूर्व विधायक सविता दीवान शर्मा, विकास नारोलिया, रूपेश राजपूत, दिनेश शर्मा, कलेक्टर सोमेश मिश्रा, एसपी साई कृष्ण एस थोटा, जिला पंचायत सीईओ हिमांशु जैन, एडीएम अनिल जैन, अपर कलेक्टर बृजेन्द्र रावत, एसडीएम जय सोलंकी, डिप्टी कलेक्टर डॉ. बबिता राठौर और समाजसेवी डीएस दांगी शामिल थे। बड़ी संख्या में नगरवासी भी उपस्थित रहे। मंत्री श्री राव ने कहा कि स्वच्छता को दैनिक आदत बनाना चाहिए और सभी को अपने-अपने स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में शामिल होना चाहिए।

ऑपरेशन मुस्कान में बड़ी सफलता, 9 माह से लापता बालिका यूपी से बरामद

नर्मदापुरम । रेल पुलिस के अभियान ऑपरेशन विशेष मुस्कान में जीआरपी इटारसी को बड़ी सफलता मिली है। करीब 9 महीने से लापता 14 वर्षीय बालिका को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले से सकुशल बरामद कर उसके परिजनों को सौंप दिया गया। घटना की जानकारी के अनुसार 12 अगस्त 2025 को डिंडोरी निवासी एक व्यक्ति ने जीआरपी इटारसी में शिकायत दर्ज कराई कि वह अपनी बेटी के साथ गोवा एक्सप्रेस से जबलपुर जा रहा था। इटारसी स्टेशन पहुंचने से पूर्व उसकी बेटी बाथरूम जाने की बात कहकर गई, पर स्टेशन पर वापस नहीं लौटी। पिता ने ट्रेन और प्लेटफॉर्म पर खोजबीन की और रिश्तेदारों से भी संपर्क किया, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। इसके बाद मामला जीआरपी में दर्ज करवा दिया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए रेल पुलिस अधीक्षक अंकित जायसवाल के निर्देश पर थाना प्रभारी संजय चौकसे के नेतृत्व में एक विशेष टीम गठित की गई। टीम ने साइबर सेल की मदद से लगातार तकनीकी जांच और पड़ताल की। इसके परिणामस्वरूप 24 मई 2026 को पुलिस ने बालिका को ग्राम दौलतपुर खरका, थाना शिकोहाबाद, जिला फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) में उसकी कजिन बहन के घर से सकुशल बरामद किया। रविवार को बालिका को विधिवत उसके माता-पिता को सौंप दिया गया।

कलेक्टर ने समय-सीमा बैठक में पीएचई एवं नगरीय प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को दिए निर्देश

पीएचई, नगरीय प्रशासन तथा अन्य संबंधित विभाग शिकायत मिलने पर तुरंत एक्शन लें

नर्मदापुरम। दोपहर मेट्रो

कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने आयोजित समय-सीमा बैठक में पीएचई एवं नगरीय प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में पेयजल आपूर्ति से संबंधित किसी भी शिकायत पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि पीएचई, नगरीय प्रशासन तथा अन्य संबंधित विभाग शिकायत मिलने पर तुरंत एक्शन लें तथा प्रभावित क्षेत्रों में वैकल्पिक पानी की व्यवस्था कराएं। कलेक्टर ने समस्त एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्र में नियमित रूप से जलापूर्ति की मॉनिटरिंग करने और प्राप्त शिकायतों की दैनिक समीक्षा करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि यदि किसी सीएम हेल्पलाइन या विभागीय प्रकरण एक दिन से अधिक समय तक लंबित पाया गया तो संबंधित अधिकारी व कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। उन स्थानों पर जहाँ पेयजल स्रोत के सुधार में अधिक समय लग रहा है, वहाँ वैकल्पिक व्यवस्था कर निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित करने का आदेश दिया गया।

ऊर्जा विभाग को भी निर्देश दिये गए कि जल जीवन मिशन के तहत संचालित नल जल योजनाओं में बिजली कनेक्शन काटे जाने जैसी समस्या न हो। पीएचई विभाग को अभियान मोड में जिले भर के हैंडपम्प व अन्य सुविधाओं की जांच दोबारा कराने तथा निर्माण कार्यों के दौरान सीवरेज लाइन या अन्य कामों के समय पेयजल पाइपलाइन को विशेष सुरक्षा देने का निर्देश दिया गया। कलेक्टर ने कहा कि जिले में पेयजल उपलब्धता सर्वोच्च प्राथमिकता हो। कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा करते हुए बताया कि अप्रैल माह में अधिकांश अधिकारियों ने सकारात्मक कार्य किया, पर कुछ विभाग अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर सके। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक विभाग अपनी स्थिति आगामी ग्रेडिंग माह में सुधारें और प्रदेश स्तर पर शीर्ष-5 रैंक हासिल करने का प्रयास करें। जिन विभागों का प्रदर्शन सी व डी श्रेणी में रहा, उनके संबंधित अधिकारियों पर जुर्माना लगाया जाएगा।

उत्कृष्ट कार्य के लिये प्रशंसा

कलेक्टर ने शिकायतों के निराकरण में बेहतर कार्य करने वाले अधिकारियों का आकलन कर कुल वेटेज स्कोर 90 प्रतिशत रहने पर प्रशस्ति पत्र देकर सराहना की। प्रभारी जिला आपूर्ति नियंत्रक नीता कोरी तथा महाप्रबंधक प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना सुश्री साक्षी पटेल को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कलेक्टर ने चिकित्सा-कानून से संबंधित मामलों को मैडलेपर पोर्टल पर 100 प्रतिशत ऑनलाइन दर्ज कराने तथा सीएमएचओ द्वारा साप्ताहिक समीक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। जल जीवन मिशन की समीक्षा के दौरान पीएचई के ईई को नल जल योजना के हस्तांतरण के समय ग्राम वासियों व जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में जल उत्सव मनाकर व्यवस्थित रूप से हस्तांतरण करने को कहा गया। इसके अतिरिक्त जिला स्तरीय तैयारियों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने खेल मैदानों के लिये भूमि चिन्हांकन कराने, जनगणना 2027 से संबंधित रिपोर्टों का अद्यतन कराने तथा आगामी मूंग उपार्जन के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। समय-सीमा बैठक में राहवीर योजना के तहत दुर्घटना में घायल व्यक्ति की सहायता कर उन्हें अस्पताल पहुंचाने के लिये ताज खान को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कलेक्टर ने उनके साहसिक कार्य की सराहना की। बैठक में जिला पंचायत सीईओ हिमांशु जैन, एडीएम अनिल जैन, अपर कलेक्टर बृजेन्द्र रावत सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

जैन समाज ने निकाली रैली, किया प्रदर्शन

सिरोंज। दोपहर मेट्रो

रीवा में दो आर्यिका माताजी की दुर्घटना में मौत की उच्चस्तरीय जांच और साधु संतों की सुरक्षा की मांग को लेकर जैन समाज द्वारा निकाला गया मौन जुलूस सोमवार को आक्रोश में बदल गया। विगत दिनों रीवा में विहारत दो जैन आर्यिका माताजी की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। जिसको लेकर सम्पूर्ण जैन समाज में खासी नाराजगी व्याप्त है। समाज साधु संतो और माताजी की सुरक्षा के लिए चिंतित है। इसी चिंता से सरकार को अवगत कराने के लिए जैन समाज द्वारा सोमवार को सम्पूर्ण प्रदेश में मौन रैली और ज्ञापन का आयोजन किया गया था। सिरोंज में भी सुबह 9 बजे जैन समाज के सदस्य कठाली बाजार स्थित श्री चंद्रप्रभु जिनालय के सामने एकत्रित हो गए। यहीं से समाज की महिलाओं और पुरूषों ने सामूहिक मौन जुलूस शुरू कर दिया। जो मुख्य बाजार से होते हुए थाना परिसर में पहुंचकर थम गया। यहां पर सकल दिगंबर जैन समाज को मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन एसडीएम हरिशंकर विश्वकर्मा को सौंपना था। ज्ञापन लेने के लिए एसडीएम के बजाय तहसीलदार आए तो जैन समाज के सदस्य नाराज जो गए। थाने में इंतजार के बाद भी जब एसडीएम नहीं आए तो जैन समाज के पुरूष सदस्यों ने परिसर के बाहर जाकर नारेबाजी शुरू कर दी। सभी बीच सड़क पर बैठ गए और प्रशासन के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए एसडीएम को मौके पर बुलाने पर अड़ गए।

निकला मौन जुलूस, देशभर में श्रद्धांजलि सभा

गंजबासौदा। दोपहर मेट्रो

रीवा में पद विहार कर रही जैन आर्यिका श्री श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका श्री उपशममति माताजी की सड़क दुर्घटना में हुई मृत्यु को लेकर पूरे देश में जैन समाज द्वारा एक साथ श्रद्धांजलि सभाएं आयोजित कर विरोध प्रदर्शन किया गया। इसी क्रम में नगर में भी सकल जैन समाज ने मौन जुलूस निकालकर घटना की उच्च स्तरीय जांच, दोषियों को कठोर दंड तथा देशभर के पदविहारी साधु-संतों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय संत सुरक्षा नीति लागू करने की मांग उठाई। सकल जैन समाज के आह्वान पर नगर के सभी जिनालयों, चैत्यालयों, धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों तथा जैन समाज द्वारा संचालित संस्थाओं के प्रतिनिधि स्थानीय महावीर विहार में एकत्रित हुए। श्रद्धांजलि सभा में बड़ी संख्या में महिला, पुरुष एवं युवा शामिल हुए और दिवंगत आर्यिकाओं को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि सभा के बाद भगवान महावीर विहार से एक विशाल मौन जुलूस निकाला गया। जुलूस में समाजजन हाथों में काली पट्टी बांधकर शांतिपूर्ण तरीके से विरोध दर्ज कराते नजर आए। मौन जुलूस भगवान महावीर मार्ग से सुभाष चौक, नेहरू चौक एवं जय स्तंभ चौक होते हुए लाल परेड ग्राउंड स्थित एसडीएम कार्यालय पहुंचा। जुलूस में सबसे आगे महिला मंडल तथा पीछे धर्म ध्वजा लेकर पुरुष एवं युवा चल रहे थे। इसके बाद जैन समाज के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन एसडीएम अनुभा जैन को सौंपा। ज्ञापन में रीवा घटना की उच्च स्तरीय जांच, आरोपी को फांसी की सजा, देशभर के पदविहारी साधु-संतों को विहार के दौरान पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराने, राष्ट्रीय संत सुरक्षा नीति लागू करने तथा संतों के विरुद्ध अपराधों को विशेष संवेदनशील श्रेणी में शामिल करने की मांग की गई।

मासिक बैठक में खाद संकट और उपार्जन अव्यवस्थाओं पर जताई चिंता

किसानों को खाद के लिए भटकाना बंद करे सरकार: भारतीय किसान संघ

गंजबासौदा। दोपहर मेट्रो

किसानों के हितों के लिए सतत संघर्षरत भारतीय किसान संघ जिला विदिशा की मासिक बैठक नवीन कृषि उपज मंडी कार्यालय गंजबासौदा में सम्पन्न हुई। बैठक में किसानों से जुड़ी ज्वलंत समस्याओं, गेहूं उपार्जन व्यवस्था, खाद संकट और आगामी संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय किसान संघ के प्रांत संगठन मंत्री भरत पटेल उपस्थित रहे।

बैठक में प्रांत, संभाग, जिला कार्यकारिणी एवं जिले की सभी तहसीलों के पदाधिकारियों ने किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। बिजली विभाग के प्रदेश एवं जिला अधिकारियों के साथ पूर्व में हुई बैठकों की तहसीलवार समीक्षा की गई तथा किसानों की समस्याओं के समाधान की स्थिति पर चर्चा हुई। कार्यकर्ताओं ने गेहूं, चना और मसूर खरीदी व्यवस्था की समीक्षा करते हुए उपार्जन केंद्रों पर फैली अव्यवस्थाओं, स्लॉट बुकिंग में तकनीकी परेशानियों, तुलाई में देरी तथा किसानों को हो रही कठिनाइयों से अवगत कराया। बैठक में यह भी बताया गया कि किसान संघ ने कई स्थानों पर व्यवस्था सुधार के लिए सक्रिय भूमिका निभाई। बैठक में आगामी खरीफ सीजन के लिए खाद संकट को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की गई। वक्ताओं ने कहा कि किसानों को खाद के लिए परेशान होना पड़े, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है और प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े करती है। भारतीय किसान संघ ने सर्वसम्मति से मांग की कि खाद वितरण एवं टोकन बुकिंग व्यवस्था में आ रही परेशानियों का शीघ्र समाधान किया जाए ताकि किसानों को समय पर खाद उपलब्ध हो सके। बैठक में आगामी कार्ययोजना के तहत वृक्षारोपण अभियान, बलराम जयंती उत्सव एवं संगठन के लिए अन्न संग्रह कार्यक्रम की रूपरेखा भी तय की गई। बैठक में प्रांत संगठन मंत्री भरत जी पटेल, प्रांत मंत्री दिनेश बाबू दुबे, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य श्री पूरन सिंह यादव, संभाग अध्यक्ष विशन सिंह बघेल, संभाग सह मंत्री अशोक शर्मा, संभागीय जैविक प्रमुख चंद्रमोहन रघुवंशी, जिला महिला संयोजिका श्रीमती मिथिलेश अग्रवाल, जिला उपाध्यक्ष ललित पंथी, जिला सहमंत्री रितेश जैन, जिला कोषाध्यक्ष राजेश श्रीवास्तव, जिला जैविक प्रमुख वीर सिंह रघुवंशी सहित तहसीलों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिक्षा व्यवस्था पर सवाल

एक ही शिक्षक दो जगह कर रहा नौकरी

अनूपपुर। दोपहर मेट्रो

जिले में संचालित एक निजी विद्यालय पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। जानकारी के अनुसार विद्यालय में कार्यरत कुछ शिक्षक एक साथ दो-दो जगह नौकरी कर रहे हैं। खास बात यह है कि जिन शिक्षकों के दस्तावेज इसी शैक्षणिक सत्र की मान्यता प्रक्रिया में लगाए गए थे, वही शिक्षक अन्य संस्थानों में भी कार्यरत बताए जा रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक मान्यता के लिए जिन शिक्षकों के दस्तावेज प्रस्तुत किए गए थे, उस दौरान भी संबंधित शिक्षक दूसरी जगह कार्यरत थे। इस संबंध में भुगतान (पेमेंट) से जुड़े दस्तावेज और सीसीटीवी फुटेज होने का दावा किया जा रहा है। यदि जांच में यह तथ्य सही पाए जाते हैं, तो यह मान्यता प्रक्रिया में गंभीर अनियमितता मानी जा सकती है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि एक ही शिक्षक दो जगह कार्यरत हैं, तो विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित होना तय है। साथ ही यह भी सवाल उठ रहे हैं कि आखिर विभागीय जांच के दौरान इन तथ्यों की पुष्टि क्यों नहीं की गई।

मेट्रो एंकर जल स्रोत पूजन, कलश यात्रा और संगोष्ठी के माध्यम से आधा दर्जन गांवों में जागरूकता कार्यक्रम

गंगा जल संवर्धन अभियान के जरिए ग्रामीणों को दिया जल संरक्षण का संदेश

सिरोंज। दोपहर मेट्रो

गंगा दशहरे के पावन अवसर पर ग्राम बरेज सहित आधा दर्जन प्रस्फुटन ग्रामों में जल संरक्षण का संदेश श्रद्धा, भक्ति और जनभागीदारी के साथ गूंज उठा। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद से संबंधित नवांकुर संस्था सर्व धर्म कल्याण सेवा समिति के मार्गदर्शन में ग्राम विकास प्रस्फुटन समितियों द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत ग्राम बरेज, बड़ौदा ताल, कस्बा ताल, कारांखेड़ी और चाठोली सहित आधा दर्जन गांवों में विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम की शुरुआत जल स्रोत पूजन एवं गंगा कलश यात्रा से हुई, जिसने पूरे वातावरण को भक्तिमय और प्रेरणादायक बना दिया। इसके बाद भगवान शिव का सामूहिक अभिषेक, जल संरक्षण विषय पर संगोष्ठी तथा भजन कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। नवांकुर संस्था प्रमुख प्रमोद रघुवंशी ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि जल केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। इसकी रक्षा करना हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। उन्होंने वर्षा जल संचयन, जल स्रोतों की साफ-सफाई एवं संरक्षण जैसे उपाय अपनाने की अपील करते हुए कहा कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए आज से ही जल बचाने की दिशा में ठोस कदम उठाना जरूरी है। इस अवसर पर गांव के प्रबुद्धजन, समाजसेवी भागवत सिंह, बृजेंद्र रघुवंशी, मीना बाई, अभिषेक राजपूत, नवल सिंह राजपूत, माखन महावर, शिवराज प्रजापति, बलराम राजपूत, शिवहरि शर्मा, राधारमण कर्मी, कपिल कुर्मी सहित बड़ी संख्या में स्कूली विद्यार्थी एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

न्यूज विंडो

एसडीएम ने किया गुरैया नदी में श्रमदान, निर्माण के दिए निर्देश

तेंदूखेड़ा। गंगा दशहरा पर्व के अंतर्गत नगर में स्वच्छता एवं जल संरक्षण को लेकर विशेष श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर एसडीएम सी. जी. गोस्वामी ने नगर परिषद कर्मचारियों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ गुरैया नदी पहुंचकर श्रमदान किया तथा स्वयं झाडू लगाकर स्वच्छता का संदेश दिया। अभियान के दौरान नदी तट एवं आसपास के क्षेत्र में सफाई कार्य किया गया और नागरिकों को जल स्रोतों के संरक्षण एवं स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। एसडीएम श्री गोस्वामी ने गुरैया नदी के संरक्षण एवं जल स्तर को बनाए रखने के उद्देश्य से चैक डेम निर्माण कार्य शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और ऐसे अभियान समाज में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम में नगर परिषद सीएमओ प्रेम सिंह चौहान, नगर परिषद अध्यक्ष सुरेश चंद जैन सहित नगर परिषद का पूरा अमला उपस्थित रहा। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने श्रमदान कर अभियान को सफल बनाने में सक्रिय सहभागिता निभाई। गंगा दशहरा पर्व के अवसर पर आयोजित इस अभियान से नगरवासियों में स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक संदेश गया।

पेसा मोबलाइजर्स की सेवा बहाल करने जयस ने सौंपा ज्ञापन

तेंदूखेड़ा। पूर्व में सरकार द्वारा पेसा क्षेत्रों में मोबलाइजर्स की नियुक्ति की गई थी ताकि पेसा क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के सरकारी कार्य सही प्रकार से संचालित हो सके लेकिन सरकार ने इन सभी की नियुक्ति निरस्त कर गलत किया है इसी संबंध में जय आदिवासी युवा शक्ति जयस तेंदूखेड़ा जिला दमोह द्वारा महामहिम राज्यपाल मध्य प्रदेश के नाम अनुविभागीय अधिकारी तहसील तेंदूखेड़ा को ज्ञापन सौंपकर मांग की गई है कि संविधान की पांचवी अनुसूची से अनुसूचित प्रदेश के आदिवासी विकास खंडो की ग्राम पंचायतो में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत पेसा कानून के क्रियान्वयन के लिए पंचायत राज्य संचालनालय मध्य प्रदेश के आदेश क्रमांक 14904 दिनांक 31/12/2020 के द्वारा पेसा मोबलाइजर्स का चयन किया गया था लेकिन संचालनालय के आदेश क्रमांक 8448 दिनांक 18 मई 2026 के तहत यह कहते हुए कि आरजीएसए योजना दिनांक 31 मार्च 2026 को समाप्त हो चुकी है एवं नवीन नीति निर्धारण प्रक्रियाधीन है पेसा मोबलाइजर्स को तत्काल प्रभाव से सेवा मुक्त कर दिया गया है जिससे प्रदेश के 5254 पेसा मोबलाइजर्स के समक्ष आजीविका एवं जीवन यापन का संकट उत्पन्न हो गया है।

जमानत निरस्त होते ही तीन आरोपी गिरफ्तार, मारपीट मामले में केस दर्ज

नरसिंहपुर। थाना ठेमी क्षेत्र के ग्राम करकबेल में हुई मारपीट की घटना में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को पुनः गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया है। मामला गंभीर प्रकृति का होने तथा प्रकरण में अतिरिक्त धाराएं जुड़ने के बाद पुलिस द्वारा आरोपियों की जमानत निरस्त कराने के लिए न्यायालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया था। प्राप्त जानकारी के अनुसार मारपीट की घटना के बाद थाना ठेमी में आरोपियों के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई करते हुए प्रकरण दर्ज किया गया था। पुलिस ने प्रारंभिक कार्रवाई में सोनू उर्फ सागर ठाकुर निवासी बौछार, अभिषेक लोधी पिता फूल सिंह लोधी निवासी कंधरापुर तथा भरत लोधी पिता रोशन लाल लोधी निवासी समनापुर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया था, जहां से उन्हें जमानत मिल गई थी। इसके बाद प्रकरण की गंभीरता और नई धाराएं जुड़ने पर पुलिस ने आरोपियों की जमानत निरस्त कराने हेतु न्यायालय में आवेदन लगाया। मामले की सुनवाई के बाद माननीय न्यायालय ने तीनों आरोपियों की जमानत निरस्त करते हुए गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए। वारंट जारी होते ही थाना ठेमी पुलिस सक्रिय हुई और आरोपियों की तलाश कर तीनों को गिरफ्तार कर पुनः न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस के अनुसार मामले में आगे की वैधानिक कार्रवाई जारी है।

गोंडवाना की विरासत, महिला नेतृत्व और शहडोल की राजनीति में दिखती एक झलक

शहडोल। भारतीय राजनीति में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जिनकी कार्यशैली में इतिहास की विरासत और समाज की संवेदनाएं साफ दिखाई देती हैं। शहडोल संसदीय क्षेत्र की सांसद हिमाद्रीसिंह को लेकर भी क्षेत्र में अक्सर ऐसी चर्चाएं सुनने को मिलती हैं कि उनके व्यक्तित्व और कार्यशैली में कहीं न कहीं कवर्धा रियासत की राजमाता शशि प्रभा देवी जी की झलक दिखाई देती है। राजमाता शशि प्रभा देवी केवल राजघराने की प्रतिनिधि नहीं थीं, बल्कि वे उस दौर की प्रभावशाली महिला

जननेत्रियों में शामिल थीं जब राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बेहद सीमित हुआ करती थी। उन्होंने ग्रामीण विकास, महिला सहभागिता, आदिवासी समाज के उत्थान और सामाजिक चेतना के लिए उल्लेखनीय कार्य किए। वर्ष 1977 में कवर्धा विधानसभा से जीत हासिल कर उन्होंने यह साबित किया था कि जनसेवा केवल पुरुष नेतृत्व तक सीमित नहीं है। राजनीतिक जानकारों और पुराने सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुसार, जब भी गोंडवाना समाज, छत्तीसगढ़ की राजनीति या आदिवासी नेतृत्व की चर्चा होती थी, तब हिमाद्री सिंह जी की स्वर्गीय माताजी कई बार राजमाता शशि प्रभा देवी जी का उल्लेख किया करती थीं। उनके विचार, कार्यशैली और समाज के प्रति समर्पण को उदाहरण के रूप में देखा जाता था। यही कारण है कि माना जाता है कि हिमाद्री सिंह जी ने भी बचपन और पारिवारिक वातावरण से आदिवासी समाज, महिला नेतृत्व और जनसेवा की प्रेरणा प्राप्त की। शहडोल, उमरिया, अनूपपुर और आदिवासी अंचलों में आज भी गोंडवाना की राजनीतिक विरासत की चर्चा होती है।

तेंदूखेड़ा में बेतरतीब ढंग से खड़े वाहन ट्रैफिक में बन रहे बांधा

बेपटरी हुई यातायात व्यवस्था ने बढ़ाई मुसीबत, हर दिन नगर में लगता है जाम

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

बेपटरी हो चुकी यातायात व्यवस्था का सबसे बड़ा असर नगर के बाजार क्षेत्र पर पड़ रहा है। पहले जहां मुख्य मार्ग व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र हुआ करता था तो वहीं अब यहां अतिक्रमण के कारण सड़क पर जाम की स्थिति बनी रहती है जिसके कारण लोग मुख्य सड़क बाजार से कम, अन्य दुकानों से सामान खरीदते हैं जाम से परेशान होकर ग्राहक अब सड़क पार करने से कतराने लगे हैं। जहां एक ओर व्यापारिक प्रतिष्ठान बढ़ गए हैं तो वहीं दूसरी ओर खकरिया रोड के सकरे एवं जाम से भरपूर होने के हैं कारण लोग अब वहां खरीदारी के बजाय वैकल्पिक मार्गों पर जाने लगे दरअसल नगर परिषद द्वारा दी गई दुकानों की सीमा से बाहर जाकर अधिकांश व्यापारियों ने अपनी दुकानें बढ़ा ली हैं। वे सड़क तक अस्थाई शो केस और सामान रखकर दुकान का विस्तार कर लेते हैं हैं और जो व्यापारी विस्तार नहीं किए हुए हैं, वह अपनी दुकान के सामने हाथठेले की दुकाने लगवा लेते हैं। ऐसे व्यापारी, ठेला वालों से हर दिन राशि वसूलते हैं। जिससे सड़क पर चलने के लिए जगह नहीं बचती है। नगर की यातायात व्यवस्था अब तक नहीं सुधरी है। जहां देखो वहां जाम की स्थिति निर्मित हो रही है। नगर में अतिक्रमण व अव्यवस्थित यातायात से नगरवासी काफी परेशान हैं। सबसे ज्यादा दिक्कतों का सामना जनपद पंचायत मार्ग पर रहने वाले लोगों को करना पड़ रहा हैं इस मार्ग पर सबसे ज्यादा जाम के हालात बनते हैं। क्योंकि इस मार्ग पर कृषि मंडी के कारण आए दिन दर्जनों ट्रक, कंटेनर, ट्रैक्टर ट्राली व अन्य वाहन निकलने से जाम लगा रहता है।

थाना प्रभारी ने बिना जवाब दिए फोन काटा

इस संबंध में जब तेंदूखेड़ा थाना प्रभारी रावेंद्र बागरी से बात करने के लिए फोन लगाई गई तो उन्होंने रिसीव किया लेकिन जैसे ही नगर की यातायात व्यवस्था को लेकर बात की तो उन्होंने फोन काट दिया जब दोबारा से फोन किया तो फोन नहीं उठाया गया इसके पहले भी अनेक मामलों को लेकर थाना प्रभारी से बात करने का प्रयास किया जाता है तो थाना प्रभारी रावेंद्र बागरी द्वारा फोन रिसीव करके और मामले को सुनकर फोन काट दिया जाता है उस पर थाना प्रभारी द्वारा कोई जवाब नहीं दिया जाता है जिससे प्रतीत होता है थाना प्रभारी द्वारा नगर की व्यवस्था से कोई लेना-देना नहीं है इसलिए वो कभी भी नगर भ्रमण पर नहीं निकलते हैं

अतिक्रमण से 50 फीट का मार्ग 20 का रह जाता है

तहसील कार्यालय से लेकर शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय तक मुख्य मार्ग लगभग 50 फीट चौड़ा है, लेकिन दिन में ये 20 फीट ही बचता है। क्योंकि मार्ग के दोनों ओर हाथ ठेले व बड़े वाहन खड़े रहते हैं। जिसके कारण सकरा बना रहता है इसके अलावा मुख्य मार्ग से नगर में जाने वाली सड़कों पर भी अव्यवस्थित वाहन खड़े रहते हैं। साथ ही हाथ ठेले वाले भी सड़क पर आ गए हैं। जिससे मार्ग से गुजरने वाले अन्य वाहन चालकों को परेशानी होती है। नगर के भटरिया मार्ग की भी हालत बेहद खराब है। उधर बैंकों के सामने तो वाहनों की लंबी कतार लगी रहती है। गौर करने वाली बात ये हैं कि बदहाल ट्रैफिक सुधारने के लिए नगर वासी लगातार मांग करते आ रहे हैं, पर जिम्मेदार है कि इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जिससे अब लोगों में शासन-प्रशासन के खिलाफ आक्रोश पनप रहा है। पुलिस प्रशासन द्वारा इस और कोई कार्रवाई नहीं करने से कहीं न कहीं अधिकारी बड़े हादसे का इंतजार कर रहे तब कहीं जाकर इस और ध्यान दिया जाएगा। नगर के लोगों का आरोप है कि नगर की सड़कों पर कभी भी पुलिस नजर नहीं आती है ना ही थाना प्रभारी नगर भ्रमण पर निकलते हैं जिसके कारण चारों ओर सड़कों पर ट्रैफिक व्यवस्था चरमरा गई है और लोग अपनी मनमानी अनुसार सड़कों पर व्यापार है नगर में किसी दिन कोई बड़ी घटना घटित हो जाएगी तब कहीं जाकर पुलिस गश्ती करेंगी।

अमरकंटक में भांग की दुकान खोलने की मांग

अमरकंटक।। दोपहर मेट्रो

भाजपा नेता तरूण शर्मा ने धार्मिक नगरी शहर में भांग की दुकान खोले जाने की मांग उठाई है। उनका कहना है कि जिस प्रकार ओमकारेश्वर और महाकालेश्वर मंदिर क्षेत्र में धार्मिक परंपराओं के अनुसार भांग उपलब्ध होती है, उसी तरह अमरकंटक में भी इसकी व्यवस्था की जानी चाहिए।

तरुण शर्मा का कहना है कि अमरकंटक भगवान शिव और मां नर्मदा की तपोभूमि है, जहां बड़ी संख्या में साधु-संत और श्रद्धालु पहुंचते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि भांग का उपयोग शिव परंपरा और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है, इसलिए सरकार को नियंत्रित और वैधानिक व्यवस्था के तहत दुकान खोलने पर विचार करना चाहिए। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश सरकार ने हाल ही में कई धार्मिक नगरों में शराब बिक्री पर प्रतिबंध लागू किया है।

दो साध्वियों की मौत पर जैन समाज का प्रदर्शन, की सख्त कार्रवाई की मांग

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

रीवा में 20 मई को सड़क हादसे में दो जैन साध्वियों, पूज्य आर्यिका 105 श्रुतमति माताजी और आर्यिका 105 उपशम्मति माताजी, का निधन हो गया। घटना के बाद देशभर के जैन समाज में चिंता व्याप्त है सोमवार को तेंदूखेड़ा में सकल जैन समाज ने हाथी में काली पट्टी बांध कर मौन रैली निकाली गई समाज के लोगो ने तहसील कार्यालय में एकत्रित होकर घटना का विरोध जताया और प्रशासन से दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई और साधु-संतों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है तेंदूखेड़ा सकल जैन समाज ने तेंदूखेड़ा एसडीएम को ज्ञापन सौंपते हुए बताया कि साध्वियां अपने नियमानुसार पैदल विहार कर रही थीं। इसी दौरान एक तेज रफ्तार अनियंत्रित वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। साध्वियां सड़क किनारे और फुटपाथ मार्ग से चल रही थीं, इसके

बावजूद यह हादसा हुआ

समाज की ओर से दिए गए ज्ञापन में दोषी वाहन चालक पर कठोर कानूनी कार्रवाई करने की अपील की गई। इसके साथ ही, घायल श्रावकों का त्वरित और समुचित इलाज सुनिश्चित करने और प्रभावित परिवारों को आर्थिक व सामाजिक मदद प्रदान करने की भी मांग की गई है जैन साधु-संतों के विहार मार्गों पर विशेष सुरक्षा व्यवस्था लागू करने की भी मांग की गई है। इसमें हाईवे और प्रमुख मार्गों पर नियंत्रित ट्रैफिक नीति लागू कर तीव्र गति और लापरवाही पर अंकुश लगाना शामिल है। पदविहार कर रहे संतों के लिए अलग, सुरक्षित कॉरिडोर का निर्माण करने और सड़क किनारे सफेद लाइनयुक्त सुरक्षा मार्ग विकसित करने की भी मांग की गई है, ताकि पैदल विहार सुरक्षित ढंग से हो सके। सकल जैन समाज ने सुबह 8 बजे श्री पारसनाथ मंदिर से रैली निकालकर तहसील कार्यालय पहुंचे जहां तेंदूखेड़ा एसडीएम सीजी गोस्वामी को राष्ट्रपति प्रधानमंत्री गृहमंत्री एवं मुख्यमंत्री और राज्य सरकार से देशभर में विहार कर रहे जैन साधु-संतों की सुरक्षा के लिए एक विशेष राष्ट्रीय नीति बनाने की मांग की है। इसका उद्देश्य भविष्य में ऐसी दुखद घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकना है।

जैन समाज के पदाधिकारियों ने जोर दिया कि साधु-संत केवल जैन धर्म तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे पूरे समाज को नैतिकता, शांति और अहिंसा का संदेश देते हैं। इसलिए, उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना शासन और समाज दोनों की साझा जिम्मेदारी है। उन्होंने प्रशासन से त्वरित जांच, दोषियों की पहचान व सख्त दंड की अपील की है और यह भी कहा कि दुर्घटना के कारणों की पारदर्शी जांच कर यातायात व्यवस्थाओं में आवश्यक सुधार किए जाएं ज्ञापन प्राप्त करने के बाद एसडीएम सीजी गोस्वामी ने कहा कि संतों के साथ हुई घटना दुखद है।

आसमान से बरस रही आग, गर्म हवा और लू से लोग हो रहे परेशान, कटौती से त्रस्त

नरसिंहपुर। दोपहर मेट्रो

जिले में इन दिनों गर्मी ने अपने सारे पुराने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। सूरज की तपिश ऐसी है कि सुबह 9 बजे के बाद ही सड़कें तवे की तरह तपने लगती हैं और दोपहर होते-होते बाजार सुनसान दिखाई देने लगते हैं। भीषण लू और झुलसाती हवाओं ने आमजन का जीना मुश्किल कर दिया है। मौसम विभाग द्वारा मध्यप्रदेश के कई जिलों में हीटवेव और लू का अलर्ट जारी किया गया है तथा तापमान 44 डिग्री के आसपास पहुंचने की चेतावनी दी गई है। गर्मी का सबसे ज्यादा असर मजदूर, किसान, छोटे दुकानदार और वृद्ध,बच्चों पर पड़ रहा है। गांवों में पेयजल संकट गहराने लगा है, वहीं शहर में बिजली कटौती लोगों के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम कर रही है। बिजली गायब रहने से कूलर और पंखे शोपीस बन गए हैं। अस्पतालों में उल्टी, चक्कर, डिहाइड्रेशन और लू के मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि हर साल गर्मी बढ़ती जा रही है लेकिन प्रशासन की तैयारी सिर्फ कागजों तक सीमित रहती है। सार्वजनिक स्थानों पर न तो पर्याप्त प्याऊ हैं और न ही बस स्टैंड एवं बाजार क्षेत्रों में छाया की व्यवस्था दिखाई देती है। शहर के कई इलाकों में पानी की सप्लाई भी समय पर नहीं हो रही, जिससे लोगों में भारी आक्रोश है।विशेषज्ञों के अनुसार लगातार बढ़ता तापमान, पेड़ों की कटाई और जलस्त्रोतों का खत्म होना इस विकराल गर्मी का बड़ा कारण बनता जा रहा है। मौसम विभाग ने अगले कुछ दिनों तक राहत के संकेत नहीं दिए हैं और प्रदेश में लू का असर जारी रहने की संभावना जताई है। लोगो से अपेक्षा की जाती है कि गर्मी से बचाव के जरूरी उपाय- दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक अनावश्यक बाहर निकलने से बचें अधिक से अधिक पानी, नींबू पानी और छाछ का सेवन करें, सिर पर गमछा या टोपी लगाकर ही बाहर निकलें, बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखें, खाली पेट धूप में जाने से बचें, पेड़ लगाएं और जल संरक्षण को बढ़ावा दें, यदि समय रहते प्रशासन ने पानी, बिजली और स्वास्थ्य व्यवस्थाओं पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले दिनों में हालात और भयावह हो सकते हैं। नरसिंहपुर की जनता अब सिर्फ राहत नहीं, बल्कि ठोस व्यवस्था की मांग कर रही है।

वनांचल में गूंज रही भक्ति की स्वर लहरियां नागबाबा मंदिर के पास महायज्ञ जारी

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

तेंदूखेड़ा-झलौन मार्ग पर वनांचल क्षेत्र में स्थित श्री नागबाबा मंदिर, के पास आयोजित श्री श्री 1008 श्री सिद्ध नाग बाबा पंचकुण्डीय रूद्र महायज्ञ एवं संगीतमयी श्रीराम कथा का आयोजन श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ जारी है। 21 मई से प्रारंभ हुआ यह धार्मिक आयोजन 27 मई तक चलेगा, जिसमें क्षेत्र सहित दूर-दराज से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। यज्ञ का संचालन यज्ञकर्ता श्री श्री 108 द्वारकानन्द जी महाराज, श्री पंचअग्नि अखाड़ा हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के सान्निध्य में किया जा रहा है। वहीं संगीतमयी श्रीराम कथा का वाचन बालव्यास प्रिया किशोरी जी, श्रीधाम वृंदावन द्वारा किया जा रहा है। कथा प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से आयोजित हो रही है, जिसमें भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र, भक्ति, धर्म और मानव कल्याण के संदेशों का भावपूर्ण वर्णन किया जा रहा है। कथा श्रवण के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हो रहे हैं। आयोजन की शुरुआत 21 मई को भव्य कलश यात्रा एवं नगर भ्रमण के साथ हुई। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के बीच गणेश पूजन, पंचांग पूजन एवं अन्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराए गए। पंचकुण्डीय रूद्र महायज्ञ में आचार्यों द्वारा वैदिक विधि-विधान से आहुतियां दी जा रही हैं, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत बना हुआ है। वनांचल क्षेत्र में स्थित नाग बाबा मंदिर परिसर को आकर्षक सजावट से सजाया गया है। समिति द्वारा पेयजल, बैठक व्यवस्था एवं प्रसाद वितरण की विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। आयोजन समिति के सदस्यों ने बताया कि महायज्ञ का उद्देश्य क्षेत्र में सुख, शांति, समृद्धि एवं धर्म जागरण का संदेश देना है। महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं विशाल भंडारे का आयोजन 27 मई , बुधवार को ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी के अवसर पर किया जाएगा।

मेट्रो एंकर नौतपा के पहले दिन खरगोन जिले के अधिकतर इलाकों में अचानक बदला मौसम

नौतपा के पहले ही दिन तेज आंधी के साथ बारिश, ओले भी गिरे

खरगोन। दोपहर मेट्रो

जिले में नौतपा के पहले ही दिन सोमवार शाम को कई अचानक मौसम बदलों और तेज आंधी के साथ बारिश और ओलावृष्टि शुरु हो गई। हालांकि इससे पहले दिन की सुबह सूरज ने तीखे तेवर दिखाए। सुबह 8 बजे के बाद ही सूर्य की तपिश ऐसी महसूस होने लगी मानो आसमान से आग बरस रही हो। तेज धूप और गर्म हवाओं ने लोगों का घरों से निकलना मुश्किल कर दिया। दोपहर होते - होते सड़कें वीरान हो गईं, बाजारों की रौनक गायब हो गई और लोग घरों में कैद होने को मजबूर दिखे। लेकिन, शाम करीब 5 बजे के बाद जिले का मौसम बदला और बमनाला समेत कई क्षेत्रों में आंधी बारिश के साथ चने आकार के ओले गिरने लगे। चिरिया इलाके में तेज आंधी चली। इससे जनजीवन बूरी तरह प्रभावित हो गया। भगवान पुरा में धूलभरी हवाओं के साथ बूंदाबांदी हुई। काटकुट इलाके में भी बूंदाबांदी हुई।

नौतपा के पहले दिन अधिकतम तापमान 42.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड हुआ, जबकि न्यूनतम तापमान 24.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जिले के बमनाला इलाके में नौतपा के पहले दिन सोमवार शाम करीब 5 से 6 के बीच लगभग 1 घंटे तक आंधी तुफान के साथ ओलावृष्टि और बारिश हुई। हालांकि, राहत की बात ये रही कि, मौसम बिगड़ने के बावजूद क्षेत्र में कोई जनहानी की खबर सामने नहीं आई है, जबकि इस बे मौसम की बारिश से नालियां चौक होने से रास्तों में पानी जरूर भर गया।

इधर चिरिया में भी नौतपा के पहले दिन तेज आंधी - तूफान ने पहाड़ी अंचल में तबाही मचा दी। ग्राम पंचायत कुड़ी निवासी चप्पाल नाहार सिंग का मकान पूरी तरह नष्ट होकर जमींदोज हो गया। मकान के साथ घर का सामान, अनाज और खाने - पीने की चीजें भी खराब हो गईं। परिवार सामान संभाल ही रहा था कि, तेज बारिश ने बचा कुचा अनाज और राशन भी गीला कर बर्बाद कर दिया। घटना की जानकारी तुरंत ग्राम पंचायत सचिव और पटवारी को दी। चप्पाल ने बताया कि, अब नुकसान का पंचनामा बनवाकर राजस्व विभाग में आपदा राहत के तहत आर्थिक सहायता के लिए आवेदन करेंगे। काटकूट में भी रोहिणी नक्षत्र के पहले दिन सोमवार को अचानक काले बादल छा गए। दोपहर करीब तीन बजे बादलों की गड़गड़ाहट के साथ बूंदाबांदी शुरू हो गई। ठंडी हवाएं चलने से लोगों ने तपन भरी गर्मी से राहत की सांस ली। ये सिलसिला शाम तक जारी रहा।

फ्रेंच ओपन 2026: नोवाक जोकोविच का दमदार आगाज

रिकॉर्ड तोड़ जीत के साथ दूसरे दौर में ली एंट्री

पेरिस, एजेंसी

पेरिस की लाल मिट्टी पर एक बार फिर नोवाक जोकोविच का जादू देखने को मिला। फ्रेंच ओपन 2026 के अपने पहले मुकाबले में दुनिया के महानतम खिलाड़ियों में शामिल जोकोविच ने फ्रांस के युवा खिलाड़ी जियोवानी म्पेटशी पेरिकार्ड को 5-7, 7-5, 6-1, 6-4 से हराकर शानदार अंदाज में दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। लगभग 2 घंटे 51 मिनट तक चले इस रोमांचक मुकाबले में जोकोविच ने अनुभव, धैर्य और क्लास का बेहतरीन प्रदर्शन किया।

एक और रिकॉर्ड अपने नाम

इस जीत के साथ जोकोविच ने ग्रैंड स्लैम इतिहास में एक नया कीर्तिमान भी बना दिया। उन्होंने लगातार 82वीं बार किसी ग्रैंड स्लैम के मेन ड्रॉ में जगह बनाकर रोजर फेडरर और फेलिसियानो लोपेज का रिकॉर्ड पीछे छोड़ दिया। अब ग्रैंड स्लैम के पहले मुकाबलों में उनका रिकॉर्ड 80 जीत और सिर्फ 2 हार का हो गया है। खास बात यह है कि 2006 के ऑस्ट्रेलियन ओपन के बाद से वह किसी भी ग्रैंड स्लैम का पहला मैच नहीं हारे हैं।

पहले सेट में फ्रेंच खिलाड़ी का दबदबा

मुकाबले की शुरुआत में फ्रेंच खिलाड़ी पेरीकार्ड ने अपनी तेज सर्विस और आक्रामक खेल से जोकोविच को काफी परेशान किया। पहले सेट में जोकोविच को एक भी ब्रेक पॉइंट नहीं मिला। 5-5 की बराबरी पर पेरीकार्ड ने शानदार खेल दिखाते हुए जोकोविच की सर्विस तोड़ी और पहला सेट अपने नाम कर लिया। इसके साथ ही वह पिछले 14 वर्षों में रोलां गैरोस में जोकोविच से सेट जीतने वाले पहले फ्रेंच खिलाड़ी बन गए।

दबाव में दिखा चैंपियन का अनुभव

दूसरे सेट में मुकाबला बेहद तनावपूर्ण हो गया। पेरीकार्ड ने 5-6 पर लगातार तीन सेट पॉइंट बचाकर दर्शकों का उत्साह बढ़ा दिया, लेकिन निर्णायक क्षणों में जोकोविच का अनुभव भारी पड़ा। एक लंबी 17-शॉट रैली जीतकर उन्होंने मैच में वापसी की नींव रखी। इसके बाद सर्बियाई स्टार ने अपना खेल पूरी तरह बदल दिया और अगले दो सेटों में फ्रेंच खिलाड़ी को संभलने का मौका नहीं दिया।

टेर बैट्यू पर अजेय जोकोविच

रोलां गैरोस के पहले दौर में अब जोकोविच का रिकॉर्ड 22-0 हो गया है, जो ओपन एरा में किसी भी खिलाड़ी का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। पेरिस में फ्रेंच खिलाड़ियों के खिलाफ भी उनका रिकॉर्ड अब 13-0 का हो चुका है। इस जीत ने साफ कर दिया है कि लाल मिट्टी के बादशाहों की सूची में जोकोविच का नाम क्यों सबसे ऊपर लिया जाता है।

आईपीएल का क्वालिफायर-1 आज, धर्मशाला में 80% बारिश के आसार

बेंगलुरु और गुजरात के बीच होगा मुकाबला मैच जीतने वाली टीम फाइनल में पहुंचेगी

धर्मशाला, एजेंसी

आईपीएल2026 के क्वालिफायर-1 में मंगलवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस आमने-सामने होंगी। यह मैच धर्मशाला में खेला जाएगा। जीतने वाली टीम सीधे फाइनल में पहुंचेगी। हालांकि बारिश होने के 80 प्रतिशत आसार हैं। इस मैच को जीतने वाली टीम के चैंपियन बनने की संभावना ज्यादा होगी क्योंकि 2011 से प्लेऑफ सिस्टम आने के बाद 15 में से 12 फाइनल क्वालिफायर-1 जीतने वाली टीमों ने जीते हैं।

हेड-टु-हेड रिकॉर्ड में बेंगलुरु और गुजरात बराबरी पर हैं। दोनों के बीच अब तक 8 आईपीएल मैच खेले गए हैं। इनमें 4 मैच बेंगलुरु और 4 गुजरात ने जीते हैं। कोई मैच टाई या बेनतीजा नहीं रहा। इस सीजन में दोनों टीमों का दो बार आमना-सामना हुआ है और दोनों ने एक-एक जीत हासिल की है। पिछले मुकाबले को गुजरात ने 4 विकेट से जीता था। उससे पहले बेंगलुरु को 5 विकेट से जीत मिली थी।

कोहली आरसीबी के टॉप स्कोरर, 4 फिफ्टी लगा चुके

कप्तान रजत पाटीदार की कप्तानी में बेंगलुरु ने इस सीजन अटैकिंग बैटिंग के दम पर 8 बार 200 रन का आंकड़ा पार किया है। विराट कोहली टीम के टॉप स्कोरर हैं। वे एक शतक और 4 फिफ्टी के सहारे 557 रन बना चुके हैं। कोहली के अलावा, पडिक्कल ने 3 और कप्तान पाटीदार ने 4 अर्धशतक लगाए हैं। धर्मशाला में वेंकटेश अय्यर ने पंजाब के खिलाफ नाबाद 73 रन बनाकर टीम को जीत दिलाई थी। गेंदबाजी में जोश हेजलवुड और भुवनेश्वर कुमार की जोड़ी ने मजबूती दी है। भुवी टीम के टॉप विकेट टेकर हैं। सीजन की शुरुआत में आरसीबी का मिडिल ऑर्डर आक्रामक था, लेकिन लीग स्टेज के दूसरे हाफ में नंबर 4 से 8 तक के बल्लेबाज फ्लॉप रहे हैं। टीम लगातार कोलैप्स झेल रही है। अनकैप्ड और विदेशी खिलाड़ी जैकब बेथेल रनों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

साई सुदर्शन टॉप स्कोरर, रबाडा ने 24 विकेट झटके

गुजरात की टीम मजबूत गेंदबाजी और टॉप ऑर्डर के दम पर प्लेऑफ में पहुंची है। दूसरे हाफ में त्रअ की गेंदबाजी उसकी सबसे बड़ी ताकत रही है। कगिसो रबाडा, मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा ने विरोधी बैटर्स को खूब परेशान किया है। रबाडा 24 विकेट के साथ पर्पल कैप की रेस में हैं। राशिद खान 19 विकेट ले चुके हैं। टीम ने आखिरी लीग मैच में चेन्नई सुपर किंग्स को 89 रन से हराया था। कप्तान शुभमन गिल (616 रन), साई सुदर्शन (638 रन) और जोस बटलर (469 रन) शानदार फॉर्म में हैं। ऑरेंज कैप होल्डर सुदर्शन 7 फिफ्टी लगा चुके हैं। शेरफेन रदरफोर्ड के जाने के बाद नंबर 4 और 5 की पोजीशन GT के लिए सिरदर्द बनी हुई है। ग्लेन फिलिप्स और टॉम बैंटन मिले मौकों में निरंतरता नहीं दिखा सके हैं। लोअर ऑर्डर में राहुल तेवतिया और शाहरुख खान पर मैच फिनिश करने का दबाव रहता है।

जरूरत है उनके खेल के बाकी पहलुओं को परखने की

वैभव सूर्यवंशी का रियल टेस्ट बाकी है..., संजय मांजरेकर ने दी बेबी बॉस को वॉर्निंग

नई दिल्ली एजेंसी

टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर ने 15 साल के बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को लेकर बड़ा बयान दिया है। मांजरेकर का मानना है कि बेबी बॉस वैभव जितने शानदार बल्लेबाज हैं, उतनी ही जरूरत उनके खेल के बाकी पहलुओं को परखने की भी है। उन्होंने साफ कहा कि सिर्फ कुछ बड़े शॉट खेलने से कोई खिलाड़ी पूरी तरह तैयार क्रिकेटर नहीं बन जाता।

संजय मांजरेका ने कहा कि मौजूदा समय में कई खिलाड़ी सिर्फ बल्लेबाजी या गेंदबाजी तक सीमित हो गए हैं। इससे क्रिकेटर के असली स्किल का पता नहीं चलता। मांजरेकर के मुताबिक एक खिलाड़ी की पहचान सिर्फ उसके चौके-छक्कों से नहीं, बल्कि उसके पूरे खेल से होनी चाहिए। उन्होंने रोहित शर्मा का उदाहरण देते हुए कहा कि अब कई खिलाड़ी सिर्फ कुछ गेंदें खेलकर मैच से बाहर हो जाते हैं और उन्हें फील्डिंग, दबाव या बाकी चुनौतियों का सामना ही नहीं करना पड़ता। स्पोर्ट्सस्टार के इनसाइट एज पॉडकास्ट में संजय मांजरेकर ने कहा, क्या हम वैभव सूर्यवंशी के खेल का सिर्फ एक ही पहलू देखना चाहते हैं। क्रिकेटर सिर्फ बल्लेबाज या गेंदबाज नहीं होना चाहिए। हमें यह भी देखना चाहिए कि वह दबाव में कैसा फील्डर है, मुश्किल हालात में कैसे रिएक्ट करता है और मैच के तनाव को कैसे संभालता है।

इस रूल को लेकर भड़के मांजरेकर

संजय मांजरेकर ने कहा कि क्रिकेट की खूबसूरती इसी में है कि खिलाड़ी को हर विभाग में खुद को साबित करना पड़ता है। अगर कोई बल्लेबाज शानदार रन बनाता है लेकिन फील्डिंग में कमजोर है, तो विपक्षी टीम उसकी उस कमजोरी को निशाना बनाएगी और यही असली खेल है। उन्होंने आगे बताया, अगर कोई अच्छा गेंदबाज है, तो मैं सिर्फ उसके चार ओवर नहीं देखना चाहता। मैं यह भी देखना चाहता हूं कि वह फील्डिंग कैसी करता है। खेल को खिलाड़ी के हर पहलू की परीक्षा लेनी चाहिए। संजय मांजरेकर का मानना है कि इम्पैक्ट प्लेयर नियम खिलाड़ियों की कमजोरियों को छिपाने का मौका देता है। उनके मुताबिक इससे युवा खिलाड़ियों का विकास भी प्रभावित हो सकता है, क्योंकि वे अपने खेल के बाकी हिस्सों पर उतना काम नहीं कर पाते।

मनोरंजन | बॉलीवुड का कोना

वेलकम टू द जंगल का गाना रिलीज

भोजपुरी हसीना संग नॉटी हुए अक्षय

बॉलीवुड के खिलाड़ी एक्टर यानी अक्षय कुमार अपने फैंस को एंटरटेन करने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं। चाहे वो हेलीकॉप्टर से छलांग लगाना हो या फिर भोजपुरी धुन पर नाचना। अपनी आने वाली फिल्म वेलकम टू जंगल को हिट बनाने के लिए अक्षय हर हथकंडा अपना रहे हैं। फिल्म का मच-अवेटेड भोजपुरी गाना घिस घिस घिस रिलीज हो गया है और फैंस को जबरदस्त क्रेजी

हालांकि ऐसा पहली बार नहीं है जब भोजपुरी सिनेमा और बॉलीवुड का आपस में मेल हो रहा हो। हाल ही में पवन सिंह ने स्त्री 2 के लिए आई नहीं गाना गाया था तो वहीं खेसारी लाल यादव ने सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी का %पनवाड़ी% गाना गाया था। अब वेलकम टू जंगल फिल्म से हाल ही में नया गाना घिस घिस घिस रिलीज हुआ, जहां अक्षय भोजपुरी सिंगर-एक्ट्रेस अक्षरा सिंह संग जमकर कमर मटकाते हुए नजर आए। अक्षय का मस्तमौला अंदाज फैंस के सीधा दिल में उतर गया। एकदम भोजपुरिया स्टार स्टाइल में अक्षय गाने में अपना तड़का लगाया। लंबे बाल-हल्की दाढ़ी, धोती-कुर्ता में अक्षय का अंदाज बेहद मजेदार लगे। गाना में वो भोजपुरी हसीना अक्षरा सिंह से संग खूब

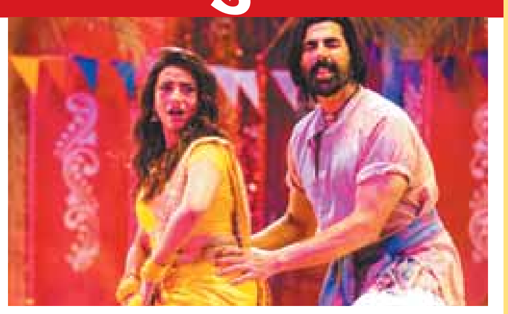

जमकर नाचे। गाने के बोल भी बेहद मस्तीभरे सुनाई पड़ते हैं- तोहर लागल बा दिलवा प्लेबॉय से, रगड़ के नहला देब साबुन से। इतना ही नहीं अक्षय कुमार एकदम भोजपुरी स्टाइल में अक्षरा से ये भी कहते दिखते हैं- तनी पास आवा नॉटी गल।' खैर, अक्षय तो जमकर इस गाने का मजा ले रहे हैं। इसे अपने इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए वो लिखते हैं- अगर आपकी जिंदगी थोड़ी ज्यादा ही घिस रही है तो अब वक्त है घिस घिस घिस के साथ अपनी वाइब को बदल लेने का।

क्यों भोजपुरी की ओर किया रुख?

अक्षय कुमार आने वाली मल्टीस्टारर कॉमेडी फिल्म वेलकम टू जंगल में इस बार बिल्कुल अलग अंदाज में नजर आने वाले हैं। माना जा रहा है कि सिर्फ गाना ही नहीं बल्कि, अक्षय फिल्म में एक भोजपुरी स्टार का रोल निभा रहे हैं, जो कहानी का सबसे मजेदार और धमाकेदार हिस्सा बताया जा रहा है। अपने किरदार को पूरी तरह असली और देसी टच देने के लिए अक्षय ने भोजपुरी इंडस्ट्री की मशहूर और हाई फीस लेने वाली एक्ट्रेस अक्षरा सिंह की मदद ली है। फिल्म की कहानी एक ऐसे भोजपुरी एक्टर के इर्द-गिर्द घूमती है, जो छोटे पर्दे और देसी फिल्मों से निकलकर इंटरनेशनल सिनेमा तक पहुंचता है।

कान्स में छाई उर्वशी, डिजाइनर गाउन नहीं, पर्स ने लूटी लाइमलाइट, कीमत करेगी हैरान

कान्स फिल्म फेस्टिवल 2026 अब खत्म हो चुका है। मगर बॉलीवुड एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला कान्स में अपना जलवा बिखेरने से नहीं रुक रही हैं। हाल ही में वो एएमएफआर गाला कान्स इवेंट में शामिल हुई थीं, जहां दुनियाभर के बड़े-बड़े सितारे पहुंचते हैं। उर्वशी ने इस दौरान एक बेहद खूबसूरत सिल्वर गाउन पहना, जिसपर सभी का ध्यान गया। लेकिन इसके अलावा एक्ट्रेस की एक और चीज सुर्खियों में आई। उन्होंने रेड कार्पेट पर एक यूनीक बैग कैरी किया, जिसे देख लोगों की नजरें उनपर टिकी रह गईं। उर्वशी रौतेला ने एएमएफआर गाला कान्स रेड कार्पेट पर एस्प्रेसो मार्टिनी के डिजाइन वाला हैंडबैग कैरी किया था। एक्ट्रेस आमतौर पर अपने यूनीक हैंडबैग्स के लिए सुर्खियां बटोरती रहती हैं। इस इवेंट में भी उन्होंने कुछ वैसा ही किया। उर्वशी ने अपना बैग ऐसे पकड़ा हुआ था, जैसे उनके हाथ में सचमुच की कॉफी हो।

एक्ट्रेस का एस्प्रेसो मार्टिनी स्टाइल बैग मशहूर ब्रैंड जुडिथ लैइबर ने डिजाइन किया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस छोटे से हैंडबैग की कीमत 5.5 लाख रुपये है। इसपर काफी बारीकी से स्टाइलिंग की गई है,

कई सारे क्रिस्टल की मदद से इसे एस्प्रेसो कॉफी का लुक दिया गया है, जो फोटोज में देखने पर बिल्कुल असली जैसा लगता है।

उर्वशी रौतेला इस साल कान्स फिल्म फेस्टिवल में भी गई थीं, जहां उनके अनोखे लुक्स ने सनसनी मचा दी थी। वो जिस भी अवतार में दिखीं, उसे सोशल मीडिया पर काफी पसंद किया गया। दिलचस्प बात ये है कि इस दौरान भी उन्होंने एक अनोखा कैरी बैग लिया था, जो किसी रानी के ताज के डिजाइन में बना था।

मेट्रो बाजार

रुपए में कमजोरी से घबराने की जरूरत नहीं, वैश्विक अस्थिरता घटने पर आएगी रिकवरी: अरविंद पनगढ़िया

नई दिल्ली । अर्थशास्त्री और पूर्व नीति आयोग के वाइस-चेयरमैन अरविंद पनगढ़िया ने कहा कि अगर डॉलर के मुकाबले रुपया 100 के स्तर को छूता है तो घबराने की आवश्यक नहीं है, क्योंकि जैसे ही वैश्विक अस्थिरता का दौर समाप्त होने लगेगा, रुपए में तेजी लौटेगी। पनगढ़िया ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को मनोवैज्ञानिक स्तर की रक्षा के लिए मुद्रा बाजार में अत्यधिक हस्तक्षेप करने के बजाय विनिमय दर को स्वाभाविक रूप से समायोजित होने देना चाहिए। अर्थशास्त्री के मुताबिक, डॉलर के मुकाबले रुपए के 100 के स्तर पर पहुंचने पर घबराने की आवश्यकता नहीं है। वैश्विक अनिश्चितता और भू-राजनीतिक तनाव के दौर में बाहरी झटकों को अवशोषित करने में विनिमय दर को अपना काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए। पनगढ़िया ने कहा कि अगर केंद्रीय बैंक डॉलर के मुकाबले रुपए में गिरावट को रोकने के लिए आक्रामक रूप से कदम उठाता है तो इससे देश के विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव बढ़ सकता है। अर्थशास्त्री के मुताबिक, चाहे मौजूदा वैश्विक संकट अस्थायी हो या दीर्घकालिक, मुद्रा के क्रमिक अवमूल्यन से अर्थव्यवस्था को अधिक कुशलता से समायोजित करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, अर्थशास्त्री ने तर्क दिया कि कच्चे तेल की बढ़ती वैश्विक कीमतों का घरेलू ईंधन की कीमतों पर धीरे-धीरे प्रभाव पड़ना चाहिए, न कि उन्हें कृत्रिम रूप से कम किया जाना चाहिए।

एथेनॉल आधारित स्टोव पर खाना बनाने की लागत एलपीजी से कम : नितिन गडकरी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने एथेनॉल आधारित स्वदेशी कुकिंग स्टोव टेक्नोलॉजी का अनावरण किया और कहा कि इस स्वदेशी स्टोव पर कमर्शियल एलपीजी की तुलना में कम कीमत पर खाना बनाया जा सकता है। साथ ही, उन्होंने युवा भारतीयों की विज्ञान में रुचि को बढ़ावा देने के लिए 40 करोड़ रुपए की एक पहल की घोषणा भी की। नागपुर में एक कार्यक्रम में बोलते हुए गडकरी ने कहा कि नई तकनीक में खाना पकाने के लिए उपयुक्त लौ उत्पन्न करने के लिए एथेनॉल और पानी के मिश्रण का उपयोग किया जाता है। मंत्री ने कहा, पानी में 7 प्रतिशत एथेनॉल मिलाकर स्टोव से लौ उत्पन्न की जा सकती है, और यह खाना पकाने वाली गैस से सस्ती है। यह हमारे देश में ही विकसित की गई है। यह घोषणा जीवाश्म ईंधन के टिकाऊ और किफायती विकल्प के रूप में एथेनॉल के लिए गडकरी के लंबे समय से चले आ रहे समर्थन के अनुरूप है। पिछले कई वर्षों से, उन्होंने परिवहन और ऊर्जा सहित विभिन्न क्षेत्रों में यह तर्क देते हुए

एथेनॉल के उपयोग को लगातार बढ़ावा दिया कि यह आयातित कच्चे तेल पर भारत की निर्भरता को कम करने में मदद कर सकता है, साथ ही घरेलू कृषि और स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों का समर्थन भी कर सकता है। भारत वर्तमान में अपनी कच्चे तेल की आवश्यकताओं का लगभग 87 प्रतिशत आयात करता है, जिससे ऊर्जा सुरक्षा एक प्रमुख नीतिगत प्राथमिकता बन जाती है। सरकार ने पेट्रोल में एथेनॉल मिश्रण को आक्रामक रूप से बढ़ाया है, मिश्रण का स्तर 2014 में 1.53 प्रतिशत से बढ़कर 2025 में 20 प्रतिशत हो जाएगा।

भीषण गर्मी से तप रहा चीन, राहत पाने बीच पर उमड़ा जनसैलाब

शेनझेन। यह तस्वीर चीन के शेनझेन शहर की है, जहां भीषण गर्मी से राहत पाने के लिए दामेशा बीच पर लोगों का भारी हुजूम उमड़ पड़ा है। तापमान में अचानक हुए इजाफे और उमस के कारण हजारों की संख्या में लोग यहां पहुंच गए हैं। यहां का तापमान भले ही अभी 35एष्ट है, लेकिन शहर समुद्र के पास होने के कारण भयंकर उमस और चिपचिपाहट है। इस वजह से गर्मी 42ए से 45एष्ट जैसी महसूस हो रही है। पूरे एशिया में इस वक्त चिलचिलाती धूप और झुलसाने वाली गर्मी पड़ रही है, जिससे बचने के लिए स्थानीय लोग और पर्यटक समुद्र की लहरों का सहारा ले रहे हैं।

आसमान से बरसती आग के बीच यह समुद्री तट लोगों के लिए सबसे बड़ा 'कूलिंग जोन' बन गया है। दरअसल, इन दिनों चीन में 'लेबर डे' की लंबी छुट्टियां चल रही हैं। स्कूल और ऑफिस बंद होने की वजह से परिवारों की भीड़ पर्यटन स्थलों पर टूट पड़ी है। इस बेतहाशा भीड़ को कंट्रोल करने और डूबने जैसी घटनाओं को रोकने के लिए प्रशासन ने तट पर सुरक्षा बढ़ा दी है और अतिरिक्त लाइफगार्ड्स भी तैनात किए हैं।

न्यूज विंडो

प्रसव के दौरान इस्तेमाल होने वाले ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन पर रोक

जयपुर। प्रसव के दौरान इस्तेमाल होने वाले ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन के एक बैच पर राजस्थान ड्रग कंट्रोल विभाग ने तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। विभागीय जांच में इंजेक्शन का सैंपल गुणवत्ता मानकों पर खरा नहीं उतरा, जिसके बाद इसकी बिक्री और उपयोग दोनों प्रतिबंधित कर दिए गए हैं। राजस्थान के ड्रग कंट्रोलर अजय फाटक ने बताया कि परीक्षण के दौरान इंजेक्शन में ऑक्सीटोसिन तत्व निर्धारित मात्रा से कम मिला, जिससे इसकी प्रभावशीलता पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। यह इंजेक्शन सामान्यतः प्रसव पीड़ा शुरू कराने और बच्चे के जन्म के बाद अत्यधिक रक्तस्राव रोकने के लिए उपयोग में लिया जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, ऑक्सीटोसिन की मात्रा कम होने से प्रसूता के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है और इमरजेंसी स्थिति में जोखिम बढ़ सकता है।ड्रग कंट्रोल विभाग ने कंपनी द्वारा निर्मित इसी इंजेक्शन के अन्य बैचों और दूसरी दवाइयों के सैंपल भी जांच के दायरे में लेने के निर्देश दिए हैं। विभागीय टीम अब प्रदेशभर में इस दवा की सप्लाई और उपयोग की निगरानी करेगी। न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में प्रसूताओं के उपचार के दौरान इस कंपनी के दूसरे बैच के इंजेक्शन उपयोग में लिए गए थे।

दर्दनाक सड़क हादसे में चार लोगों की मौत, तीन की हालत गंभीर

बाराबंकी। यूपी के बाराबंकी में तड़के करीब 3.00 बजे एक इनोवा खड़े ट्रक में पीछे से जा घुसी। हादसे में चार युवकों की मौत हो गई। जबकि, तीन गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। वहां से उन्हें हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया। हादसा लखनऊ-सुल्तानपुर हाईवे पर हैदरगढ़ क्षेत्र में भिखरा गांव के पास हुआ। हादसे में इनोवा सवार गाजीपुर के गैबीपुर निवासी राहुल सिंह (35), चंदौली के मुगलसराय निवासी राहुल कुमार (36), बलिया के रामपुर रसड़ा निवासी सत्यम (38) व ट्रक खलासी गाजीपुर निवासी सूरज यादव (30) की मौत हुई है। वहीं, मिर्जापुर के चुनार निवासी चंदन सिंह (35) और पंकज सिंह (34), बलिया के बेला निवासी प्रशांत गंभीर रूप से घायल हुए हैं। घायलों को ट्रॉमा सेंटर लखनऊ के लिए रेफर किया गया है। बताया गया कि इनोवा सवार सभी लोग वाराणसी से कैंची धाम दर्शन को जा रहे थे।

चंडीगढ़ में भीषण हादसा, एक के बाद एक फटे 3 सिलेंडर, 3 गंभीर

चंडीगढ़। चंडीगढ़ के बुड़ैल गांव के एक घर में एक के बाद एक तीन गैस सिलेंडरों में जोरदार धमाके हुए। विस्फोट इतना भीषण था कि तीन मंजिला मकान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया और आस-पास के घरों की दीवारें तक हिल गईं। इस हादसे में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं, जिन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक जब पहला धमाका हुआ, तो इलाके में अफरा-तफरी मच गई। लोग अभी कुछ समझ ही पाते कि बैक-टू-बैक दो और जोरदार विस्फोट हो गए। धमाकों की गूंज इतनी तेज थी कि दूर-दूर तक इसकी आवाज सुनाई दी और पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस, दमकल विभाग और सीआरपीएफ की टीमें तुरंत मौके पर पहुंचीं। मलबे में दबे लोगों को काफी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया और तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों के मुताबिक तीनों की हालत बेहद गंभीर बनी हुई है। जिस घर में धमाके हुए वहां करीब 15 गैस सिलेंडर रखे हुए थे। आशंका है कि यहां गैस सिलेंडरों को ब्लैक में बेचने का अवैध कारोबार चल रहा था। आशंका जताई जा रही है कि गैस रिसाव के बाद धमाके हुए।

कोलकाता के बोस इंस्टीट्यूट की स्टडी में खुलासा

हिमालय तक पहुंच गया प्रदूषण गंगा के मैदान में 20 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली, एजेंसी

एक स्टडी में पाया गया है कि केवल एक दशक में प्रदूषण 20 फीसदी ये ज्यादा बढ़ गया है। इसमें बिहार और पश्चिम बंगाल सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। इतना ही नहीं, मैदानों से निकलने वाला प्रदूषण अब हिमालय तक भी पहुंच रहा है।

कोलकाता के बोस इंस्टीट्यूट ने यह स्टडी की है, जिसे 'एटमॉस्फेरिक एनवायरनमेंट' जर्नल में प्रकाशित करवाया गया है। स्टडी में यह भी सामने आया है कि अभी तक देश में बायोमास जलाने की समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।

अध्ययन से पता चला है कि थर्मल पावर प्लांट, बायोमास जलने और शहरी ठोस कचरा जलने से लगातार होने वाले उत्सर्जन से प्रदूषण की स्थिति गंभीर होते जा रही है। यह गंगा के मैदान, हिमालयी क्षेत्र और पूर्वोत्तर भारत के 25 सालों के डेटा पर आधारित एक सैटेलाइट स्टडी है।

हिमालय तक ऐसे पहुंच रहा प्रदूषण

स्टडी में बताया गया है कि मैदानों में हो उत्सर्जन हो रहा है, वह सीधे हिमालय में एरोसोल की मात्रा को प्रभावित कर रहा है। एरोसोल वातावरण में धूल, कालिख और रासायनिक बूंदों जैसे सूक्ष्म ठोस या तरल कणों के सस्पेंशन को कहते हैं।पंजाब, हरियाणा और दिल्ली का प्रदूषण हिमालय की पश्चिमी और मध्य श्रेणियों तक पहुंच रहा है और बिहार और पश्चिम बंगाल का प्रदूषण पूर्वी हिमालय को नुकसान पहुंचा रहा है। इससे पता चलता है कि पहाड़ों की हवा में भी अब वायु प्रदूषण घुल चुका है।

चौंकाने वाले आंकड़े

हालांकि अध्ययन में ये पाया गया कि भारत के राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के कारण बिहार, पश्चिम बंगाल और असम में पार्टिकुलेट मैटर के स्तरों में मापने योग्य सुधार देखने को मिले। लेकिन ये राज्य अभी भी अभी भी कार्बनयुक्त एयरोसोल के हॉटस्पॉट बने हुए हैं।स्टडी से पता चला कि जो कार्बन प्रदूषण 2000-2009 के दौरान बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तरी पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा और बांग्लादेश के कुछ हिस्सों में केंद्रित था, वह 2020-2024 तक पूरे पश्चिम बंगाल, बिहार, बांग्लादेश और असम, मेघालय और त्रिपुरा तक फैल गया।

क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक

जयशंकर बोले- हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर देना होगा ध्यान

नई दिल्ली, एजेंसी

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने आज कहा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र को वैश्विक विकास और स्थिरता का वाहक बने रहना चाहिए और 'क्वाड' को इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा आर्थिक विकल्पों को बढ़ावा देने की दिशा में काम करना चाहिए।

क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक में अपने शुरुआती संबोधन में उन्होंने विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और समृद्धि लाने के लिए विश्वसनीय और पारदर्शी साझेदारियों का आह्वान किया। नई दिल्ली में जयशंकर की अध्यक्षता में हुई बैठक में अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो, ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री पेनी वोंग और जापानी विदेश मंत्री तोशिमित्सु मोतेगी शामिल हुए।

सप्लाई चेन में लानी होगी मजबूती

क्वाड की बैठक इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य शक्ति-प्रदर्शन को लेकर वैश्विक चिंताओं के बीच हुई। विदेश मंत्री ने शुरुआती संबोधन में कहा, 'हमारा ध्यान स्पष्ट रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर होगा, जो 'क्वाड' की विशिष्ट सीमा है। 'उन्होंने कहा, 'वैश्विक स्तर पर हमें सप्लाई चेन की मजबूती, कनेक्टिविटी में रुकावटों, मैन्युफैक्चरिंग और संसाधनों के जमाव और जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर में कमियों जैसे मुद्दों पर ध्यान देना होगा। 'जयशंकर ने कहा, 'चर्चाओं का एक बड़ा हिस्सा और वास्तव में द्विपक्षीय बातचीत भी दुनिया की मौजूदा स्थिति पर केंद्रित रही। क्वाड समूह का हिस्सा होने के नाते हमने स्वाभाविक रूप से उन मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।

'अपनापन : नरेंद्र मोदी संग मेरे अनुभव'

पीएम मोदी पर लिखी शिवराज की किताब का विमोचन

भोपाल। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अपने 35 साल के अनुभवों को किताब के रूप में पेश किया है।उन्होंने 'अपनापन : नरेंद्र मोदी संग मेरे अनुभव' नाम से पुस्तक लिखी है, जिसका विमोचन आज दिल्ली के पूसा स्थित ह्रस्ष्ट कॉम्प्लेक्स में सुबह 10:30 बजे किया गया। इस पुस्तक का विमोचन पूर्व उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू और पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा ने किया।

पाकिस्तान में दर्दनाक हादसा, बस की टक्कर से 17 लोगों की गई जान, बचाव कार्य जारी

पेशावर, एजेंसी

पाकिस्तान के मरदान जिले में स्वात एक्सप्रेसवे पर एक बस की टक्कर से 17 लोगों की मौत हो गई है। इस हादसे में पांच लोग घायल भी बताए जा रहे हैं, जिन्हें उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि एक बस खराब होने की वजह से सड़क किनारे खड़ी थी, तभी दूसरी बस ने उसमें टक्कर मार दी, जिससे यह हादसा हुआ।

पुलिस ने बताया कि स्वात एक्सप्रेसवे पर एक तेज रफ्तार बस ने सड़क किनारे खड़ी एक मोटरबस को टक्कर मार दी। इस हादसे में कम से कम 17 लोगों की मौत हो गई, जबकि 5 अन्य घायल हो गए। पुलिस के अनुसार, यात्री बस सड़क किनारे खड़ी एक अन्य बस से टकरा गई, जो किसी खराबी के कारण खड़ी थी।

बांग्लादेश: ट्रक पलटने से मजदूरों की 15 की मौत

ढाका : बांग्लादेश में एक ट्रक पलटने से 15 लोगों की मौत हो गई है। जानकारी के मुताबिक इस हादसे में 10 लोग घायल भी बताए जा रहे हैं। पुलिस ने बताया कि ढाका से 83 किमी दूर यह हादसा हुआ। ट्रक में सवार लोग लिफ्ट लेकर यात्रा पर निकले थे। इसमें अधिकांश लोग दिहाड़ी मजदूर थे, जो छुट्टी में ईद मनाने घर जा रहे थे। रास्ते में अचानक ट्रक चालक ने नियंत्रण खो दिया, जिसके बाद यह हादसा हुआ है। पुलिस ने बताया कि तड़के मध्य बांग्लादेश के एक प्रमुख राजमार्ग पर लोहे की छड़ों और अतिरिक्त यात्रियों से लदा एक ट्रक पलट गया, जिससे कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और 10 अन्य घायल हो गए।

मेट्रो एंकर

स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट में सामने आए चौंकाने वाले आंकड़े

8.5% स्कूली बच्चे तंबाकू की चपेट में, लड़कियां भी नशे की गिरफ्त में

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत में स्कूली बच्चों के बीच तंबाकू और निकोटिन की लत एक बड़ी और गंभीर समस्या बनती जा रही है। स्वास्थ्य मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 13 से 15 साल की उम्र के लगभग 8.5 फीसदी स्कूली बच्चे किसी न किसी रूप में तंबाकू का सेवन कर रहे हैं। इस चिंताजनक स्थिति को देखते हुए दिल्ली यूनिवर्सिटी (डीयू) में एक राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें, विशेषज्ञों ने जागरूकता और सख्त कदम उठाने की जरूरत बताई।

डीयू में हुआ राष्ट्रीय परामर्श का आयोजन

31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसी अवसर पर दिल्ली यूनिवर्सिटी के सामाजिक कार्य विभाग और सोशियो इकोनॉमिक्स एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट सोसाइटी की ओर से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस परामर्श का मुख्य विषय आकर्षण को बेनकाब करना और निकोटिन व तंबाकू की लत का मुकाबला करना रखा गया था। इस मौके पर जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं और युवा प्रतिनिधियों ने युवाओं को तंबाकू से बचाने के लिए तुरंत और मजबूत कदम उठाने की मांग की।

7.4 फीसदी लड़कियां भी नशे की शिकार

कार्यक्रम के दौरान भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी ग्लोबल यूथ टोबैको सर्वे के आंकड़ों पर विस्तार से चर्चा की गई। रिपोर्ट के अनुसार देश में 13 से 15 वर्ष की आयु वाले 8.5 फीसदी स्कूली बच्चे तंबाकू की गिरफ्त में हैं।लड़कों में तंबाकू सेवन का आंकड़ा 9.6 फीसदी है।लड़कियां भी इस मामले में पीछे नहीं हैं और 7.4 फीसदी लड़कियां नशे का शिकार हो चुकी हैं।

पैसिव स्मोकिंग का भी बड़ा खतरा

रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि, केवल सीधे तौर पर नशा करने वाले बच्चे ही खतरे में नहीं हैं। लगभग 29.5 फीसदी स्टूडेंट्स ऐसे हैं जो खुद नशा नहीं करते लेकिन दूसरों के धूम्रपान करने (पैसिव स्मोकिंग) के कारण इसके संपर्क में आ रहे हैं और उनके स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा असर पड़ रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि, अगर समय रहते इस दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाली पीढ़ी के लिए इसके परिणाम बहुत खतरनाक होंगे। इसके लिए सरकार, स्कूल प्रशासन और माता-पिता सभी को मिलकर सख्त कदम उठाने होंगे।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक राजेश सिरोठिया द्वारा पी जी इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,करोंद-भानपुर बाइपास विलेज रासलाखेड़ी भोपाल से मुद्रित तथा ए-182 मनीषा मार्केट शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। संपादक राजेश सिरोठिया
स्थानीय संपादक अनिल शर्मा* आर एन आई पंजीयन क्रमांक एमपी एचआईएन/2016/68849 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) फोन : 0755-7963564